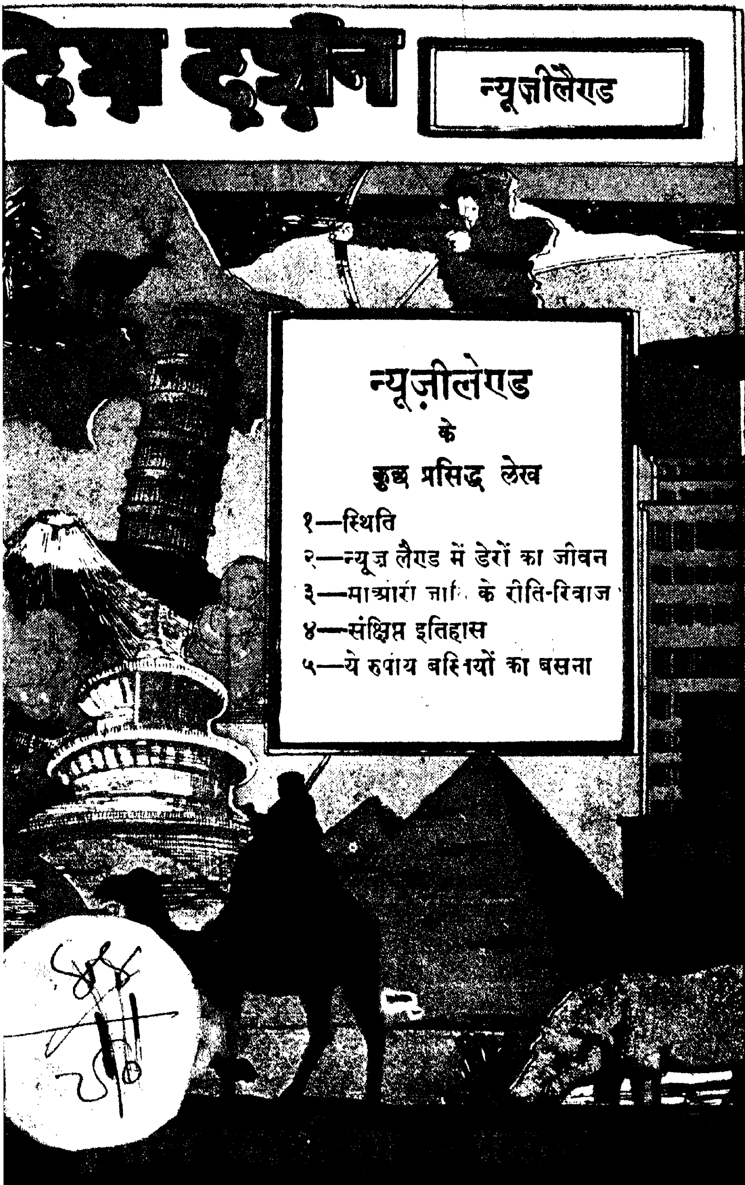

देश दर्शन
न्यूज़ीलैण्ड
न्यूज़ीलैण्ड
के
कुछ प्रसिद्ध लेख
१—स्थिति
२—न्यूज़ लैण्ड में डेरों का जीवन
३—माओरी जाति के रीति-रिवाज
४—संक्षिप्त इतिहास
५—ये रुपीय बस्तियों का बसना

मार्च १९४२]

देश-दर्शन

[चैत्र १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३]

न्यूज़ीलैंड

[संख्या ९

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची



न्यूज़ीलैण्ड में गल्लेबानी का रोज़गार।

स्थिति

न्यूज़ीलैंड द्वीपसमूह दक्षिणी प्रशान्त महासागर में स्थित है। यह एक ब्रिटिश उपनिवेश है। यह द्वीपसमूह ३३ अंश दक्षिणी अक्षांश से ५३ अंश दक्षिणी अक्षांश तक और १६६° पूर्वी देशान्तर से १७८° पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। यह द्वीप समूह आस्ट्रेलिया से लगभग १२०० मील पूर्व की ओर स्थित है।

न्यूज़ीलैंड की भौगोलिक सीमा में कैम्पबेल द्वीप सोलन्डर द्वीप, आकलैंड, ऐएटीपोडीज़, बाउएटी और स्नेअर्स द्वीपसमूह सम्मिलित हैं। इसी में कुक द्वीपसमूह, केर्माडेक द्वीपसमूह, नीवे द्वीप और प्रशान्त महासागर के दूसरे छोटे छोटे द्वीप भी शामिल हैं।

समीपवर्ती द्वीपों को मिलाकर प्रधान न्यूज़ीलैंड का क्षेत्रफल १,०३,४१५ वर्गमील है। यह क्षेत्रफल हमारे संयुक्तप्रान्त के क्षेत्रफल से कुछ ही कम है। न्यूज़ीलैंड खास में उत्तरी द्वीप और उसके समीपवर्ती द्वीप, दक्षिणी द्वीप तथा समीपवर्ती द्वीप, स्चुअर्ट द्वीप और समीपवर्ती द्वीप तथा चैथम द्वीप शामिल हैं। उत्तरी द्वीप का क्षेत्रफल ४४२८१ वर्गमील, दक्षिणी द्वीप का ५८,०९२ वर्गमील, स्चुअर्ट द्वीप का ६७० वर्गमील, चैथम द्वीपों का ३७२ वर्गमील है।

दत्तिणी द्वीप इँगलैंड और वेल्स से भी बड़ा है। उत्तरी द्वीप की लम्बाई ५१५ मील और दक्षिणी की ५२५ मील है। उत्तरी तथा दत्तिणी द्वीपों को कुक जलसंयोजक अलग करता है। यह अपने सब से संकरे भाग में १६ मील चौड़ा है।

कैम्पबोल, सोलन्डर, आकलैंड, एंटीपोडीज़, बाउण्टी और स्नेअर्स द्वीपों का क्षेत्रफल ३०७ वर्गमील है। कुक द्वीपसमूह, करमाडेक द्वीपसमूह, नीवे द्वीप और दूसरे छोटे छोटे प्रशान्त महासागरीय द्वीपों का क्षेत्रफल सब मिल कर २१२ वर्गमील है। इस प्रकार समस्त न्यूज़ीलैंड का क्षेत्रफल १,०३,६३४ वर्गमील हो जाता है।

पश्चिमी समोआ (खास कर हवाई द्वीपसमूह क्षेत्र-फल ७०३ वर्ग मील) और उपोलू (४०३ वर्ग मील) द्वीपों का शासन राष्ट्रसंघ के नियम के अनुसार न्यूज़ी-लैंड द्वारा होता है। नौरू द्वीप के कारण न्यूज़ीलैण्ड के शासन का सम्बन्ध आस्ट्रेलिया और इङ्गलैंड के साथ है। १६२६ ई० से तो केलौ या संयुक्त द्वीपों (जो पहले गिल्बर्ट और एलिस द्वीपों में शामिल थे) का शासन न्यूज़ीलैण्ड के हाथ में आ गया है।

भूरचना

न्यूज़ीलैंड अपनी प्राकृतिक भूरचना के अनुसार एक महाद्वीप की भांति है। इस द्वीप में अति प्राचीन तथा बहुत ही नवीन चट्टानें वर्तमान हैं। क्रेटेसियस और टर्शियरी युगों की चट्टानों की बनावट से पता चलता है कि समुद्र ने उसके भागों को डुबा कर उसे संसार के दूसरे भागों से अलग कर दिया है। फासिल (गड़े हुए ढाँचों की हड्डियों के) प्रमाणों से पता चलता है कि आस्ट्रेलिया से यह भाग मध्यवर्ती टर्शियरी काल में और मलय प्रायद्वीप से क्रेटेसियस काल में अलग हुआ है। जब यह भाग आस्ट्रेलिया और मलय से समुद्र द्वारा अलग हो गया तो यहां पर्वतों के निर्माण और ज्वालामुखी पर्वतों के आग-धुआं उगलने का काम आरम्भ हुआ। अब ज्वालामुखी पर्वतों का धीरे धीरे ह्रास हो रहा है।

यद्यपि न्यूज़ीलैंड की भूगर्भ विद्या में सभी प्रकार की चट्टानों का वर्णन है तो भी केम्ब्रियन काल के पहले वाली चट्टानों के होने में शंका है। सब से प्राचीन चट्टानें दक्षिण-पश्चिम की ओर फ्योर्ड प्रदेशों में पाई जाती हैं। स्चुअर्ट द्वीप के भीतरीभागों में नीस चट्टानें पाई जाती

हैं। दक्षिणी द्वीप के दक्षिणी भाग के पठारों में अति प्राचीन चट्टानें पाई जाती हैं। दक्षिणी अल्प्स पर्वतों और टस्मान खाड़ी द्वारा विभाजित किये हुये पर्वतीय शिलाओं की रीढ़ की हड्डियां भी अति प्राचीन चट्टानों की बनी हैं। यह चट्टानें स्लेट, परतदार पत्थर और भूरी कांप की बनी है। इसके सिवा और दूसरे स्थानों में प्राचीन चट्टानें बहुत कम दिखाई पड़ती हैं। दक्षिणी अल्प्स में ट्रियासिक और जुरासिक-काल की चट्टानें पाई जाती हैं। नवीन मैदानों और आग्नेय चट्टानों तथा ज्वालामुखी पर्वतों के स्थानों को छोड़ कर सब कहीं क्रेटेशियस और टर्शियरी काल की चट्टानें पाई जाती हैं जिसमें चूना, संगमरमर, बलुहा पत्थर और कोयला पाया जाता है।

न्यूज़ीलैण्ड में उच्च प्रदेश दक्षिण-पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर चला गया है। दक्षिणी द्वीप में पहाड़ पश्चिम तट के पास है, पर उत्तरी द्वीप में वह पूर्वी तट के निकट हैं। दक्षिणी द्वीप के पहाड़ बहुत ऊँचे हैं। माउण्ट कुक चोटी १२३४९ फुट ऊँची है। इसके सिवा दक्षिणी अल्प्स में लगभग १६ चोटियां १० हज़ार फुट

ऊँची हैं। इस भाग में बहुत से हिमागार हैं जिनमें सबसे बड़ा टस्मान है। यह लगभग १८ मील लम्बा और सवा मील चौड़ा है।

उत्तरी द्वीप में एग्मोंट की चोटी ८२६० फुट रुवापेह ६१७५ फुट न्गौरूहो ७५१५ फुट और तोङ्गरिरो ६४५८ फुट ऊँची हैं। इसके सिवा और दूसरी चोटियां हैं जो ६ हजार फुट से कम ऊँची हैं। तारोवेरा और व्हाइट द्वीप के आग्नेय पर्वत जागृत हैं। आग्नेय पर्वतों से निकट सम्बन्ध रखने वाले गरम चश्में और गैसर हैं। प्रशान्त तथा प्रज्वलित आग्नेय पर्वतों, गरम चश्मों और गैसरों की अधिकता उत्तरी द्वीप में है। हिमागार बर्फीली झीलें और निमग्न तट (फिअर्ड) भी बहुत हैं।

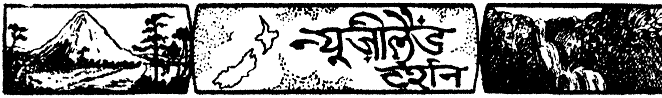
न्यूज़ीलैंड का सर्वोत्तम निचला मैदान केण्टरबरी के नाम से प्रसिद्ध है और दक्षिणी आल्प्स के पूर्व में स्थित है। यह मैदान प्रायः पहाड़ी धाराओं द्वारा लाई हुई मिट्टी से बना है। पश्चिमी तट के मैदान में कोयला और सोना बहुत है।

न्यूज़ीलैंड के मुख्य पर्वत नार्थ द्वीप पर्वत, कैकोरा श्रेणी सेंट अर्नौद श्रेणी, स्पेन्सर श्रेणी, दक्षिणी आल्प्स

दो अँगूठे (टूथम्बस) वाली श्रेणी, डारन श्रेणी, बैरियर श्रेणी और रिमारकेबिल पर्वत हैं। साधारण दृश्य-जलवायु उपज भाषा आदि की समता के कारण न्यूज़ीलैंड प्रायः द्वितीय ब्रिटेन कहलाता है।

नदियां और झीलें

न्यूज़ीलैण्ड की नदियां बड़ी उपयोगी हैं। उत्तरी द्वीप की नदियों में नावें चला करती हैं। टस्मान सागर में गिरने वाली वैकाटो, वैरोआ, मोकौ, वैङ्गावी आदि प्रसिद्ध नदियां हैं। यह नदियां वर्तमान समय में गमनागमन के लिये बड़ी उपयोगी हैं। इनमें वैकाटो सब से अधिक उपयोगी नदी है। यह नदी रुवापेहू पर्वत से निकलती है और अपनी सहायक नदियों का पानी लेती हुई २० मील उत्तर की ओर मार्ग बनाने के पश्चात् टैपो झील में प्रवेश करती है। झील छोड़ने के बाद यह नदी हूका प्रपात बनाती है। उसके बाद पहले उत्तर-पूर्व फिर उत्तर-पश्चिम बह कर समुद्र में प्रवेश करती है। वैपा नदी इसकी सहायक है। इसमें नावें चलती हैं।



मैको नदी न्यूप्ली माथ से ६० मील उत्तर-पूर्व की ओर समुद्र में गिरती है। इस नदी के ऊपरी भाग में कई एक सुन्दर प्रपात है और निचले भाग में जहाज़ चला करते हैं। वैङ्गानवी नदी में भी नावें चलती हैं। उत्तरी द्वीप के मध्यवर्ती भाग से बहुत सी छोटी छोटी नदियां निकलती हैं और मिल कर एक बड़ी वैङ्गानी नदी बनाती हैं। यह टैंगराको, मौनगानवीटेओ आदि सहायक नदियों का पानी लेती हुई, सरोवरों और तालों में होती हुई दक्षिण को बहती है। समुद्र के समीप इस नदी की गहराई अधिक हो जाती है। इस नदी द्वारा द्वीप के ऐसे भागों की यात्रा सम्भव है जहां रेलों अथवा सड़कों का अभाव है। द्वीप के पश्चिमी भाग में वैतोतारा, पाती, वैतारा आदि दूसरी नदियां हैं जिनमें कुछ दूर तक नावें चलती हैं। रांगीतीकी और वैगेहू नदियां वैङ्गानवी नदी की समानान्तर बहती हैं। इन नदियों में बहुत से प्रपात हैं जिसके कारण नावों का चलना बहुत कठिन है।

दक्षिणी द्वीप की नदियां अधिकतर हिमागारों से निकलती हैं। इनमें तारामाको, होकीतीका, वांगानवी,

वातारोवैहो, करंगारुग्रा, हास्त, अरावत, ग्रे, बुलर, क्लथा आदि अधिक प्रसिद्ध हैं ।

उत्तरी द्वीप की नदियाँ

पिआको, वैहोयु, रंगी तैकी, व्हाकाताने, वैआपू, वैपाओ, वैरोअ, मोहाका, नगोरूरोरो और तुकोंतूकी नदियां प्रशान्त महासागर में गिरती हैं । इन नदियों में सबसे बड़ी नदी रंगीतैकी है जो ९५ मील लम्बी है ।

रुवामाहांगा, हट, ओताकी, मनावात और उसकी सहायक नदियां, रांगीतिकी, तुराकिना, वांगेहू, वांगानवी और उसकी सहायक नदियां, वैतोतारा, पाती आदि नदियां कुक प्रणाली में गिरती हैं। इनमें सबसे बड़ी नदियां वेंगानवी (१४० मील) और रांगीतिकी (११५ मील) हैं।

वैतारा, मोकौ, वैकातो, वैरोअ और होक्यांगा नदियां टस्मान सागर में गिरती हैं । इनमें सबसे बड़ी वैकाटो है जो २२० मील लम्बी है ।

दक्षिणी द्वीप की नदियाँ

कुक प्रणाली में गिरने वाली नदियां औरेरे, ताकाका

मोत्वेका, वैडती, पेलोरस, वैरो, अवातेरे आदि हैं। इनमें वैरो नदी सबसे बड़ी (१०५ मील) है।

प्रशान्त महासागर में गिरने वाली नदियां क्लियरेन्स कोनवे, वैआयु, हुरुनवी, वैपारा, ऐश्ले, वैमाकारीरी और उसकी सहायक, सेल्वीन, रकैय्या और उसकी सहायक नदियां, अशबुर्तोन, रंगीताता, ओपीही, परेओरा वैहोअ, वैताकी और उसकी सहायक नदियां, हाकानवी शाग, तैएरी क्लथा और उसकी सहायक नदियां हैं। इनमें सबसे बड़ी नदियां क्लथा (२१० मील) वैताकी (१३५ मील) तैइरी (१२५ मील) और क्लियरेन्स (१२५ मील) हैं।

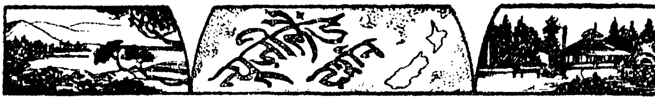
फोवो प्रणाली में गिरने वाली मतौरा, ओरेती अपारिमा, वे आयु और उसकी सहायक नदियां हैं। इन में सबसे बड़ी नदी मतोरा है जो १२० मील लम्बी है।

तस्मान सागर में गिरने वाली क्लेडायु और आर्थर हालीफोर्ड, क्रास्केड, अरावत, हास्त, कारंगारूआ फाक्स वेहो, वातारोअ, वांगानवी, वेताहा, होकीतीका, अराहूरा तारामाको, ग्रे, बुलेर, मोकी हीन्ती कारामी और हीफी नदियां हैं। इनमें सबसे बड़ी नदी बुलेर (१०५ मील

लम्बी) और वेहों, क्लैडायु और आर्थर नदियां सब से छोटी (२० मील लम्बी) हैं।

न्यूजीलैण्ड में झीलें भी अधिक हैं। उत्तरी द्वीप में तौपो, रोरुवा, रोत्वाहता, तारावेरा, वेकारेमोना, वेरारापा आदि हैं। तौपो झील २५ मील लम्बी २७ मील चौड़ी और २३८ वर्ग मील में फैली है। यह झील समुद्र धरातल से १२११ फुट की ऊँचाई पर है और ५३४ फुट गहरी है। सबसे गहरी झील वेकारेमोना है जो समुद्र धरातल से २०१५ फुट की ऊँचाई पर है और ८४६ फुट गहरी है।

दक्षिणी द्वीप में एेतोइती, एेतारोअ, ब्रनेर, कनीरी, कोलरिज, तेकापो, पुकाकी, ओहायु, हावी, वानाका, वाकातीपू, ते अनायु, मानापोरी, मोनोवै, होरोका, पोतेरितेरी, वैहाल्डा और एलेस्मेरे आदि हैं। इनमें सबसे बड़ी झील ते अनायु है जो ३३ मील लम्बी और ६ मील चौड़ी है। इसका क्षेत्रफल १३२ मील और गहराई ९०६ मील है। मानापोरी झील की गहराई १४५८ फुट और क्षेत्रफल ५६ वर्गमील है। वाकातीपू झील की गहराई



१२४२ फुट और क्षेत्रफल ११२ व० मी० है। इस झील की लम्बाई सबसे अधिक (५२ मील) है। वानाका झील ३० मील लम्बी है। सबसे छोटी झील रोतोइती है जो ५ मील लम्बी और २ मील चौड़ी है। सब से अधिक छिछली झील एल्लेस्मेरे है जो ४५ फुट गहरी है। सब से अधिक ऊँचाई वाली झील तेकापो है जो समुद्र धरातल से २३२३ फुट की ऊँचाई पर स्थित है।



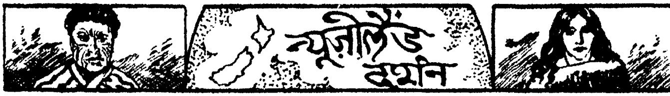
जलवायु

जलवायु

न्यूज़ीलैण्ड ३४° वा ४७° दक्षिणी अक्षाशों के मध्य स्थित है और चारों ओर समुद्र से घिरा है इसी कारण यहां की जलवायु समशीतोष्ण है। शीत काल में यहां के किसान कपड़ा उतार कर और ग्रीष्म काल में कपड़ा पहिन कर खेतों में काम कर सकते हैं। यह द्वीप पछुआ हवाओं के मार्ग में हैं इसलिये प्रायः साल भर पानी बरसता रहता है। दक्षिणी द्वीप के पश्चिमी तट पर सब से अधिक (१००· इंच) वर्षा होती है पर केण्टरबरी का मैदान हवा की आड़ में होने के कारण कुछ खुश्क है।

वेलिंग्टन।प्रान्त प्रायः इस द्वीप के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। यहां की जलवायु गरम है लेकिन यह कभी कुछ गरम और कभी कुछ शीतल हो जाती है। यहां पछुआ हवा बहुत चलती है। यहां जाड़े के दिनों में बड़ी अच्छी धूप रहती है और गरमी के दिनों में रात ठंडी रहती है।

आकलैंड प्रान्त में जनवरी मास में परम ताप ७३'६ अंश और लघु ताप ५६ अंश रहता है। यहां का



जनवरी मास का औसत तापक्रम ६६·३ और जुलाई का ५१·७ है। इस प्रान्त की वार्षिक वर्षा ४३·८ इंच होती है।

रोतारुआ प्रान्त का जनवरी मास का औसत ताप ६३·७ और जुलाई मास का ४५·७ अंश रहता है। यहां साल में ५३·२ इंच वर्षा होती है। नैपिएर प्रान्त का जनवरी व जुलाई मास का औसत तापक्रम ६६·१ व ४९ अंश है और वार्षिक वर्षा ३२·३ इंच है। वेलिंग्टन प्रान्त का जनवरी व जुलाई मास का औसत तापक्रम ६५·५ व ४७·६ अंश है और साल भर में ४८·१ इंच वर्षा होती है। नेल्सन प्रान्त का जनवरी व जुलाई का औसत ताप ६४·५ व ४६·१ अंश है और सालाना वर्षा ३७·६ इंच है। आकलैंड, रोतारुआ नैपिएर, वेलिंग्टन और नेल्सन प्रान्तों में जाड़े के दिनों में वर्षा होती है।

होकीतीका प्रान्त का जनवरी तथा जुलाई का औसत ताप ६०·२ व ४४·९ अंश है और सालाना वर्षा ११६·५ इंच है। इस प्रान्त में बसंत ऋतु में वर्षा अधिक होती है।

लिंकन का जनवरी तथा जुलाई मास का औसत ताप ६१'६ व ४३'१ अंश और सालाना वर्षा २५'३ इंच है। डुनेडिन का जनवरी तथा जुलाई का औसत ताप ५७'९ व ४२'३ अंश है और सालाना वर्षा ३६'८ इंच है। साल भर बराबर वर्षा होती है।

वेकाटीपू पर क्वींन्सटाऊन का जनवरी व जुलाई का औसत ताप ६०'१ व ३७'५ अंश और सालाना वर्षा ३०'४ इञ्च है। इनवरकार्गिल का जनवरी व जुलाई मास का औसत ताप ५६'९ व ४१'४ अंश और सालाना वर्षा ०६'५ इञ्च है। क्वीन्स टाऊन और इनवरकार्गिल में बसंत ऋतु में वर्षा अधिक होती है।

न्यूज़ीलैंड शीतोष्ण कटिबंध में है इसलिये यहां कड़ी गरमी अथवा कड़ा जाड़ा नहीं पड़ता है। जनवरी मास में गरमी की ऋतु और जुलाई में जाड़े की ऋतु होती है।



बनस्पति और पशु

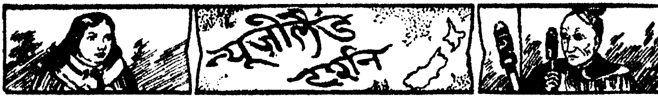
साधारण जाड़ा और प्रचुर वर्षा होने से पहाड़ों के पश्चिमी ढालों पर चौड़ी पत्ती के बन हैं। न्यूज़ीलैंड का लगभग $\frac{१}{५}$ भाग बनाच्छादित है। इससे ५० लाख एकड़ में बढ़िया लकड़ी मिलती है। कारी देवदारु, बीच, बर्च आदि के अनेक बन सर्वत्र पहाड़ों पर फैले हुये हैं। कारी देवदारु की लकड़ी बड़ी मूल्यवान होती है। इन पेड़ों का घेरा आठ दस फुट और ऊँचाई २०० फुट होती है। इनकी लकड़ी बड़ी मज़बूत होती है और घर तथा जहाज बनाने के काम आती है। कारी के वृक्ष का गोंद बड़ा उपयोगी तथा मूल्यवान होता है। इसके गोंद से तरह तरह की वार्निश बनाई जाती है। बहुत से स्थानों के वृक्ष प्राचीन काल में ही काटे जा चुके थे। जिनका गोंद बहुधा धरती में गड़ा हुआ मिलता है। निचले ढालों पर प्रायः प्रत्येक स्थान पर भांति भांति की झाड़ियां पाई जाती हैं।

न्यूज़ीलैण्ड में पुष्प वाले पौदे प्रायः बहुत कम पाए जाते हैं। बहुत से पहाड़ी पौदों में बड़े बड़े फूल होते

हैं जो अधिकांश स्वेत होते हैं। फल वाले वृक्षों में सेब, नाशपाती और अमरूद प्रसिद्ध हैं। आकलैंड में अंगूर होता है। केण्टरबरी में घास के मैदान तथा चरागाहें हैं जहां भेड़ें पाली जाती हैं। भेड़ों का मांस और ऊन यहां का प्रधान निर्यात है।

पूर्वी खुश्क मैदानों में चरागाह हैं। न्यूज़ीलैंड प्राचीन काल ही में और महाद्वीपों से अलग हो चुका था। इसलिये यहां के पशु विचित्र हैं। पंख रहित विशाल (६ फुट ऊँचा) मोआ पक्षी प्रायः नष्ट हो चुका है। माओरी और योरुपीय लोगों के आने के पहले मनुष्यों का डर न रहने से पक्षियों ने उड़ना बन्द कर दिया। इसी से कदाचित् यहां के पक्षियों के पंख धीरे धीरे लुप्त हो गये थे। योरुपीय लोग यहां गधे, सुअर और चूहा ले आये थे। पालतू सुअर जंगलों में भाग कर जङ्गली बन गये हैं। गाय, बैल, घोड़े, मुर्गियों, सुअरों और शहद की मक्खियों की संख्या बढ़ रही है।

यूं तो न्यूज़ीलैण्ड में भांति भांति के कीड़े मकोड़े पाये जाते हैं। परन्तु तितली के भांति के सुन्दर रंग बिरंगे कीड़ों की कमी है। ज़हरीले मकड़े अथवा मंसे



न्यूज़ीलैंड में नहीं पाये जाते हैं। पहाड़ों पर उल्लू तोता (ककापो) पाया जाता है। यह पक्षी कुछ कुछ उल्लू की भांति और कुछ तोते की भाँति होता है। कीवी पक्षी धब्बेदार शरीर का होता है। इसकी चोंच लम्बी होती है परन्तु पंख बहुत छोटे होते हैं। कठफोड़वा पक्षी के पंख इतने छोटे तथा मोटे हो गये हैं कि वह उड़ नहीं सकता है।

न्यूज़ीलैंड में सांप, घड़ियाल और कछुए नहीं पाये जाते हैं। छिपकली तो बहुत हैं परन्तु अधिकांश प्रायः तुवातारा नामक छिपकली ही पाई जाती हैं।

बीसवीं सदी के आरम्भ में यहां के तटों पर सील मछली बहुत पाई जाती थी परन्तु अब कर सील और सीलाएन मछलियों के अतिरिक्त दूसरी सील मछलियां नहीं पाई जाती हैं। पहले ह्वेल मछलियां भी मिलती थीं परन्तु अब फिनबैक और हम्पबैक के सिवा दूसरी ह्वेल नहीं पाई जाती हैं।

उपज

पिछले २० वर्षों में न्यूज़ीलैण्ड के कारखानों की उन्नति काफी हुई है फिर भी यह प्रधान रूप से एक कृषक देश है। यहां अधिकतर घास की उपज होती है। बड़े बड़े मैदानों में खासकर दक्षिणी द्वीप में घास की उपज भेड़ों से ऊन के लिये की जाती है। बहुत से मैदान ऐसे हैं जहां योरुपीय घास की उपज की जाती है। यह मैदान बनों को काट कर तयार किये जाते हैं। उत्तरी द्वीप में फिर भी वहुत से झाड़ियों के प्रदेश हैं। जो चरागाहों में बदले जा सकते हैं।

उपजाऊ भूमि और अनुकूल जलवायु होने के कारण न्यूज़ीलैंड को खेती में अधिक से अधिक लाभ होता रहा है। न्यूज़ीलैंड में वर्षा भी बराबर और अच्छी होती है। खेती में कलों का प्रयोग यहां अधिक से अधिक बढ़ता जा रहा है क्योंकि कलों के प्रयोग से व्यय कम होता है और उपज अधिक होती है।

यहाँ लगभग ६ लाख एकड़ भूमि में नाज तथा दाल की उपज, ६ लाख ८० हज़ार एकड़ धरती में साग-तरकारी और जड़ वाली वस्तुएँ होती हैं। १ लाख १६ हज़ार एकड़ भूमि चौमस रहती है, ६,३६,६३२ एकड़

भूमि में घास उगाई जाती है और उसे काट कर सुखाया जाता है तथा वहां बीज के लिये घास होती है। एक करोड़ ६६ लाख एकड़ भूमि में वह घास होती है जो न तो सुखा कर रक्खी जाती है और न उस घास से बीज ही उत्पन्न किये जाते हैं। २५,३१६ एकड़ भूमि में अंगूर तथा दूसरे विलायती फलों के बगीचे हैं। ८,७५० एकड़ भूमि में बगीचों के लिये पौधे तथा बीज के लिये वृक्ष लगे हैं। लगभग एक हज़ार एकड़ भूमि में किशमिश और मुनक्के के बगीचे हैं। ५,५७७ एकड़ भूमि में तुंग के वृक्ष हैं। ८२,६४८ एकड़ भूमि में निजी लोगों की वाटिकायें तथा आमोद-प्रमोद के लिये मैदान हैं। ८,१५,६६५ एकड़ भूमि में लकड़ी के लिये पौदे लगाये गये हैं। कुल १ करोड़ ६६ लाख एकड़ भूमि में खेती होती है। लगभग २ करोड़ ३६ लाख एकड़ भूमि खेती के योग्य है जो उपयोगी बन सकती है।

गेहूँ, जौ, जई, मक्का, उड़द, मूँग, अरहर, सेम, मटर, आलू, गाजर, शकरकन्द, शलजम, मूँगफली और दूसरी जड़ वाली वस्तुओं की उपज होती है। न्यूज़ीलैंड को भोजन के लिये नाज बाहर से मँगाने की आव-

श्यकता होती है। पनीर, मक्खन और मलाई तथा डेअरी के दूसरे सामान विदेश भेजे जाते हैं। भेड़ों से ऊन तथा मांस तयार किया जाता है।

खनिज सम्पत्ति

न्यूज़ीलैण्ड में खनिज सम्पत्ति बहुत है परन्तु व्यापारिक रूप से अभी सभी सम्पत्ति का उपयोग नहीं हो रहा है। सन् १८५७ ई० में न्यूज़ीलैण्ड में सोना निकालने का कार्य आरम्भ हुआ तब से अब तक लगभग डेढ़ अरब का सोना निकाला जा चुका है। आजकल प्रति वर्ष लगभग एक करोड़ ५० लाख का सोना निकाला जाता है। वैहीबरा, तौरांगा, काउण्टी, ओही-नामूरी, काउण्टी थेम्स, कारोमडेल काउंटी, होराकी मैदान, रीफ्टन और ब्लैक वाटर के ज़िले वाकामरीना घाटी, दक्षिणी द्वीप के पश्चिमी तट, ओटागो प्रान्त क्लथा तथा कवारौ नदी और दूसरी नदियों की घाटी में सोना पाया जाता है। नदियों का पानी बांध द्वारा रोक कर सोना निकाला जाता है।

होराकी सोने की खानों में सोने के साथ ही साथ



चांदी भी निकलती है। वहां प्रति वर्ष लगभग ४ करोड़ की चांदी निकलती है।

न्यूज़ीलैण्ड में पारा पारा, गोल्डनबे, तारानाकी के समुद्री तट रास केर, वैतांगी नदी, उत्तरी द्वीप, एलान्का-व्हिया ज़िला, पील पर्वत, नेल्सन, राएल पर्वत यार्म्स्टन के समीप, मिल्टन के समीप टेपुल पहाड़ी, लेक वाकाटीपू ज़िला, कुक पर्वत ज़िला और वेस्टलैण्ड में कोयले की खाने हैं।

न्यूज़ीलैंड में लगभग ३२ स्थानों में तांबा पाया जाता है। अब तक ग्रेटबैरियर, कावायु द्वीपसमूह और दून पर्वत पर तांबा निकालने का काम होता है। केओ, हांगारोआ माहाराहारा, उडविल्ले और रैडियर पर्वत पर तांबा निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

ओटायु, वैरोआ, द्वीपों की खाड़ी, पुरवा की खाड़ी, मांगापाई, ओतोंगा, वैहेके द्वीप, तैएरी दहाना आदि स्थानों पर मंगनीशियम धातु निकाली जाती है।

पेगासस बन्दर के समीप, स्टेवार्ट द्वीप में टीन निकाला जाता है। रीफ्टन, ग्रेमाउथ और वेस्ट पोर्ट ज़िलों में भी थोड़ी टीन पाई जाती है। ओटागो और

कैम्पबेल द्वीप में भी कुछ टीन मिलती है। प्लाटीनम न्यूज़ीलैंड में उन स्थानों पर मिलती है जहां सोना पाया जाता है। कामेरमे फ्रोक, ग्रोवेवर्न, ओरेपूकी, पाही राउण्डहिल, स्टीलहेड, बुशीअंतरीप, वैपाया, ओंतारा बीच, वैकावा, वैआयु नदी में प्लाटीनम पाई जाती है।

रोतोरुआ, टौपो झील, उत्तरी द्वीप के गरम सोते वाले प्रदेश और व्हाइट द्वीप में गंधक पाई जाती है।

बुल्लेर मोकी हिन्वी और वैकातो ज़िला, कोल क्रीक मध्यवर्ती आटागो, नाइटकैप्स, हिकूरांगा खाने, पश्चिमी तटीय ज़िले और दक्षिणी ज़िलों में कोयला निकाला जाता है। न्यूज़ीलैंड में भूरा कोयला अधिक है। १६२५ ई० में ३१,७८८ टन कोयला निकाला गया था।

कौरीगोंद पृथ्वी के भीतर से खोद कर निकाली जाती है। यह उन कौरी वृक्षों की गोंद है जो धरती के भीतर दब गये थे।

न्यूज़ीलैंड के मूल निवासी माओरी लोग हैं। इनका रंग भूरा है। ये लोग बुद्धिमान और चतुर होते हैं। आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों और इनमें आकाश पाताल का अन्तर है। योरुपियनों के आने के पहले ही ये

लोग सभ्य थे। इसलिये इन्होंने अपने देश को गोरों के आक्रमण से बचाने में बड़ी वीरता का परिचय दिया। विदेशी आक्रमण से भयभीत होकर वे कहा करते थे कि जैसे गोरों के चूहों ने हमारे चूहों को नष्ट कर दिया और जैसे विलायती मक्खी देशी मक्खी को और विलायती घास देशी झाड़ी को दूर कर रही है उसी प्रकार गोरों को फैलने से हम (माओरी) लोग भी नष्ट हो जावेंगे। फिर भी उत्तरी द्वीप में कुछ ज़िले माओरी लोगों के लिये सुरक्षित हैं। विलायती रहन-सहन और शिक्षा ग्रहण करने में ये बड़ी कुशलता दिखा रहे हैं। गोरे लोग उनके साथ बराबरी का बर्ताव करते हैं। न्यूज़ीलैंड में चार पांच सौ हिन्दुस्तानी भी हैं। शेष अँग्रेज़ हैं।

न्यूज़ीलैंड में वहां की सरकार की ओर से किसी धर्म को सहायता नहीं दी जाती है। वहां इँगलैंड चर्च के मानने वाले २४.६६ प्रतिशत, रोमन कैथलिक १३.०६ प्रतिशत, मेथाडिस्ट ८.११ प्रतिशत, बैप्टिस्ट १.६६ और दूसरे लोग १.१५ हैं।

आने जाने के मार्ग

न्यूज़ीलैण्ड में रेलवे, मोटर, स्टीम शिप (भाप से चलने वाले जहाज) और हवाई जहाजों के मार्गों के लिये अच्छी सुविधाएँ हैं। स्टेट रेलवे की प्रधान तथा शाखा लाइनों की समस्त लम्बाई ३,३२० मील है। यह रेलवे लाइनें उत्तरी तथा दक्षिणी द्वीप के खास ज़िलों में हैं। न्यूज़ीलैंड के व्यवसाय को उन्नतिशील बनाने तथा वहाँ की प्रजा को सहायता पहुंचाने के ध्यान से रेल का किराया बहुत कम रक्खा गया है। ३१ मार्च १९३७ ई० तक खुली लाइनों में ५ करोड़ ४५ लाख पौंड धन लगाया जा चुका है।

मोटर गाड़ियों का प्रचार अधिक हो जाने के कारण सड़कों की भी अधिक वृद्धि हुई है। स्थानीय शासन बोर्डों के साथ न्यूज़ीलैंड की सरकार आधुनिक प्रधान पहाड़ी मार्गों की रक्षा में हाथ बँटाती है। १९३७ ई० में वहाँ की सरकार ने १५,६७,८९८ पौंड सड़कों के बनाने और ९,४०,७२३ रु० उनकी मरम्मत आदि में व्यय किया था। डोमीनियन सरकार के निरीक्षण में



१२११४ मील सड़क है। इसके सिवा कई हज़ार मील और दूसरी सड़कें हैं जहां मोटर गाड़ियां चल सकती हैं।

३१ मार्च १९३७ ई० को न्यूज़ीलैंड में लैसेंसदार १,७१,५१४ मोटरकार, ४७,०२५ मोटर ट्रंक, २४,२०१ मोटर साइकिलें और ११,२७७ टैक्सियां, बस, ट्रेलर और सड़क पर चलने वाली दूसरी मोटर गाड़ियां थीं। मोटर गाड़ियों का कुल जोड़ २,५४,०१७ है।

हिसाब लगाने से प्रति १० मनुष्य के पीछे एक मोटर गाड़ी पड़ती है। इस विषय में औसत के हिसाब से संयुक्तराष्ट्र अमरीका और कनैडा ही न्यूज़ीलैंड से बढ़ कर हैं।

अभी हाल के कुछ वर्षों में ही हवाई मार्गों में बड़ी उन्नति हुई है। हवाई टैक्सी विमानों के अतिरिक्त और कई एक कम्पनियां काम कर रही हैं। पैन अमरीकन हवाई मार्गों की ओर से आकलैंड और सैनफ्रांसिस्को के मध्य विमान आने जाने लगे हैं।

जहाजी लाइनें

आधुनिक सवारी ले जाने वाले तथा सामान ढोने

वाले जहाज न्यूज़ीलैण्ड और इँगलैण्ड, उत्तरी, दक्षिणी तथा मध्य अमरीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागरीय द्वीपों के बीच आते जाते रहते हैं। न्यूज़ीलैण्ड में प्रवेश करने के लिये २१ बन्दरगाह हैं। इनमें कैपारा, आकलैण्ड, तौरांगा, टोकोमासबे, जिस्बोर्न, नैपियर, वैतारा, न्यूप्लाईमाउथ, पाटेअ, वांगान्वी, वेग्टिन, वैरायु, नेलसन, वेस्टपोर्ट, ग्रेमाउथ, होकीतीका, लीट्टेल्टन, तिमारू, ओमारू, डूनेडिन, इनवेरकार्गिल आदि बन्दरगाह हैं। आकलैण्ड, वेलिंग्टन, लीट्टेल्टन (क्राइस्ट चर्च) और डूनेडिन बन्दरगाहों पर सामान लादने उतारने तथा जहाजों की दूसरी आवश्यकता की पूर्ति के लिये अच्छा प्रबन्ध है।

संसार में न्यूज़ीलैण्ड ही प्रथम देश था जहां १ पेंस का पोस्टकार्ड का टिकट आरम्भ हुआ था और गत महायुद्ध के पश्चात् भी यही प्रथम देश था जहां सर्वप्रथम पुनः १ पेंस की टिकट दर की गई थी क्योंकि गत महायुद्ध में डाक के टिकट तथा व्यय में अधिकता की गई थी। न्यूज़ीलैण्ड में १७६६ डाकखाने हैं।

न्यूज़ीलैण्ड में १२,०६४ मील तार लाइनें हैं।



संसार में जनसंख्या की औसत के ध्यान से टेलीफोनों की संख्या में चौथा स्थान है। खास खास टेलीफोन के सदस्यों की संख्या १,४०,१६६ है। वहाँ २४ बेतार के तार के स्टेशन हैं। आकलैंड, वेलिंग्टन, क्राइस्ट चर्च और डूनेडिन में बड़े बड़े रेडियो स्टेशन हैं। इसके सिवा और बहुत से छोटे स्टेशन हैं। बहुत से व्यवसायी रेडियो स्टेशन भी स्थापित किये गये हैं। लैसन रखने वाले समाचार सुनने वाले स्टेशनों की संख्या २,४१,२६७ है।

जन-संख्या तथा निवासी

मार्च सन् १६३६ ई० को जन-गणना के अनुसार न्यूज़ीलैंड खास की जन-संख्या १५,७३,८१० थी। इसमें माओरी लोगों की जन-संख्या ८२,३२६ थी। इस जन-गणना में १० वर्ष पूर्व की अपेक्षा १·०५ प्रतिशत की बृद्धि हुई थी।

कुछ और दूसरे प्रशान्त महासागरीय द्वीपों की जन-संख्या १६,३५०, करमौडेक द्वीपसमूह और टोकेलाव द्वीप की ११७० और पश्चिमी समोआ की ५५,६४६ है।

देश दर्शन

३० सितम्बर सन् १९३७ ई० की जन-गणना के अनुसार प्रधान न्यूजीलैंड की जन-संख्या १५,९१,६७४ है, उसमें माओरी लोग ८५,५७६ हैं। समस्त जन-संख्या का ९४ प्रतिशत ब्रिटिश और आएरिश और ५ प्रतिशत माओरी लोग हैं।

माओरी जाति वालों को छोड़ कर न्यूजीलैण्ड की जन-संख्या १४,९१,४८४ है जिसमें ७,५६,२२६ मर्द और ७,३५,२५८ स्त्रियां हैं। न्यूजीलैण्ड में जब बस्ती बसाई गई तो मर्दों की संख्या अधिक थी। १८६१ ई० की जन-गणना में प्रत्येक हजार मर्द के पीछे ६२२ स्त्रियां थीं। उसके पश्चात् स्त्रियों की संख्या बढ़ने लगी और १९३६ ई० में स्त्रियों की संख्या बढ़कर ९७२ प्रति हजार हो गई।

१९३७ ई० की गणना के अनुसार आकलैण्ड और उसके पड़ोस की जन संख्या २,१४,२००, वेलिंग्टन की १,५१,७००, क्राइस्ट चर्च की १,३३,२०० और डुनेडिन की ८२,१०० है। बड़े प्रान्तीय कस्बों की जन संख्या २६ हजार तक है।

संसार के और दूसरे देशों की भांति न्यूजीलैण्ड के

नगरों की जन संख्या में भी अधिक वृद्धि हुई है। इस वृद्धि का मुख्य कारण नगरों में बड़े बड़े कारखानों और व्यवसायों का बढ़ना है। माओरी जाति की संख्या नगरों में गांवों की अपेक्षा अधिक घटी है।

दक्षिणी द्वीप के गांवों की जन-संख्या उत्तरी द्वीप के गांवों की जन-संख्या की अपेक्षा अधिक है। न्यूज़ीलैण्ड की जन-संख्या के १०'५७ प्रतिशत लोग खेती में, ६'६७ प्रतिशत कारखानों में, ६'२३ प्रतिशत व्यापार तथा कोष सम्बन्धी कार्यों में, ४'३७ प्रतिशत निजी रोजगार में ४'३३ आने जाने के साधनों में, ४'३७ घरेलू कार्यों में, और दूसरे कामों में ५'२७ लोग लगे हैं। धनोपार्जन करने वालों की संख्या ५५'६५ प्रतिशत है।



देश दर्शन

कारखाने

न्यूज़ीलैण्ड के कारखाने अच्छी उन्नति कर रहे हैं। आशा की जाती है कि पांच वर्ष के भीतर ही उनकी अच्छी उन्नति हो जावेगी। न्यूज़ीलैंड के कारखानों पर उन्नतिशील बनाने के लिये जो उद्योग हो रहा है उससे वहां की सरकार भली भांति सहमत है। वहां के कारखानों को सहायता प्रदान करने के लिये बाहरी माल पर चुङ्गी लगाई गई है। इण्डस्ट्रियल एक्ट १६३६ ई० के अनुसार वहां निजी रोज़गारों को अलग अलग उन्नति देने का प्रयत्न किया जा रहा है। कारखानों को सस्ती बिजली की शक्ति भी प्राप्त है क्योंकि वहां की स्थानीय सरकारें न्यूज़ीलैण्ड की सरकार के साथ हाथ बटाती हैं।

न्यूज़ीलैंड की डोमीनियन ने ५ हज़ार से अधिक कारखाने स्थापित किये हैं। इनमें से कितने ही बहुत छोटे हैं और कितने ही काफी बड़े हैं।

१६३६-३७ ई० में १०,५६,४५,७२२ पौंड का सामान न्यूज़ीलैण्ड के कारखानों में तयार हुआ था।

इस अंक में डेरी के कारखानों का २,६८,६८,६४३ पौंड और मांस का २,०७,६६,८६६ पौंड सम्मिलित है।

कृषि, खान, लकड़ी के कारखानों, ऊन के कारखानों आदि की उन्नत्ति के लिये भांति भांति की नई खोजें की गई हैं।

न्यूज़ीलैण्ड के कारखानों में खास कर शुद्ध ऊन, कपड़ा, चमड़ा, बूट जूते, घोड़े की काठियां, पेटियां, मेज़, कुर्सी, आल्मारी तथा दूसरे लकड़ी के सामान (जो दफ़्तरों और घरों में काम आते हैं), कलें, पुर्जे, लोहे फौलाद के सामान, ताँबा, पीतल और सीसे के सामान, सिमेन्ट, ईंट, खपड़े, मिट्टी के बर्तन, संगीत के बाजे, मोटर के सामान, रेडियो, भोजन के सामान, मदिरा, पेटेंट ओषधियां, दियासलाई, मोमबत्ती, साबुन, पालिश, पाउडर तथा और दूसरे भांति भांति के सामान तयार होते हैं।

न्यूज़ीलैंड में वहां के कारखानों को चलाने के लिये काफी संख्या में कलें तथा चतुर कारीगर हैं। जो न्यूज़ीलैंड के निवासियों के सूती ऊनी कपड़े, बूट-जूते, बिस्कुट और दूसरे नाज के भोजन, मदिरा, सिमेन्ट और लकड़ी के सामान तयार कर सकते हैं।

वहां के कारखानों में प्रति वर्ष काम करने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। १९३७ ई० में वहां के कारखानों में ९६,४०१ मनुष्य काम में लगे थे।

निर्यात

न्यूज़ीलैंड का ९५ प्रतिशत निर्यात वहां की भेड़ों तथा गायों से प्राप्त हुआ सामान होता है। १९३७ ई० में इस प्रकार प्राप्त हुआ सामान ६,६७,१३,३७९ पौंड का बाहर भेजा गया था।

न्यूज़ीलैंड से १,६९,८६,४७७ पौंड का मक्खन, ५३,७१,८७८ पौंड की पनीर, १२,४६,४५५ पौंड का गाय का मांस, ९३,८०,३६३ पौंड का बकरी के बच्चे का मांस, १६,३६,०२४ पौंड का बछड़े का जमाया हुआ मांस, १७,३३,९०३ पौंड का सुअर का मांस, ७६,०२,६४ पौंड का भुना हुआ मांस, ४,५२,३३५ पौंड का सेव, ४०,३२,८०२ पौंड का पशु, घोड़ों और बछड़ों का चमड़ा, ५,५७,१३२ पौंड का खरहों का चमड़ा, १६,१९,१०३ पौंड का कच्चा चमड़ा, १,९०,९३,२९१ पौंड का ऊन,

६४,७०,९६९ पौंड का चरबी तथा उसका सामान, १,५१,५८९ पौंड का कौरी गोंद, १४३४५१४ पौंड का सोना, ४१,०४,७८७ पौंड का अन्य सामान और ५,०४,५०३ पौंड का (पुनः निर्यात) सामान निर्यात होता है।

न्यूज़ीलैण्ड के सामान का सबसे बड़ा खरीदार इङ्गलैण्ड है। वहाँ प्रति वर्ष लगभग ५,०७,२४,५५० पौंड का सामान जाता है। इङ्गलैण्ड के बाद वहाँ के सामान के ग्राहकों में संयुक्त राष्ट्र अमरीका (४७,९६,०३९ पौंड), जापान (३१,६१,९८६ पौंड), आस्ट्रेलिया (१८,२४,१८३ पौंड). कनाडा (१६,६७,४४९ पौंड), फ्रांस (१०,१४,९४१ पौंड), जर्मनी (९-१८,१७१ पौंड) और बेल्जियम (७,००,९६४ पौंड) की गणना है।

ब्रिटिश देशों को ५,४७,८१,९९८ पौंड का सामान और विदेशों को न्यूज़ीलैंड का १,१६,८९,७२५ पौंड का सामान जाता है।

देश दर्शन

आयात

निम्नांकित वस्तुयें विदेशों से न्यूज़ीलैंड आती है :—

शक्कर ७,२३,२२५ पौंड की, शराब ४,२०,७१६ पौंड की, सिगरेट ४८१३१४ पौंड की, तम्बाकू ४,३६,८०० पौंड की, पूशाक १८,१४,११४ पौंड की, बूट और जूते ७,०८,०२४ पौंड के, दरियाँ और फर्श के सामान ६,१५,६३५ पौंड के, पर्दे आदि के कपड़े ४,५०,८७१ पौंड के, रुई के कपड़ों के टुकड़े आदि सामान १६,४४,२८६ पौंड का, रेशम तथा रेशम के कपड़े १२,१४,२६५ पौंड के, ऊनी सामान ११३२,८४६ पौंड का, पेट्रोल और मिट्टी का तेल १६,४२,६६७ पौंड का, कच्चा तेल ३,३२,३६० पौंड का, कोयला १,११,६७५ पौंड का, लोहे और फौलाद का सामान ५,४७,५७५ पौंड का चद्दरें ६,७६,२५६ पौंड की, पम्प तथा नालियां आदि ५,६६,०२३ पौंड की, फुटकर कड़ी धातुओं का सामान १०,३४,६३६ पौंड का, बिजली का सामान २५,६५,१७८ पौंड का, बेतार के तार का सामान

६,०७,०९९ पौंड का, लकड़ी ५,६२,५२८ पौंड की, छपाई का कागज़ ६,७६,१२५ पौंड का, किताबें, कागज़ और संगीत का सामान ६,०४३६१ पौंड का, खेती का सामान तथा कलें ८,३०,१७९ पौंड का, मोटर गाड़ियाँ ५७,९१,१३२ पौंड की, मोटर टायर ८,७८,९८७ पौंड का और दूसरा सामान २,७३,४१,२७ पौंड का होता है।

कुल आयात ५,६१,६०,६९५ पौंड का होता है।

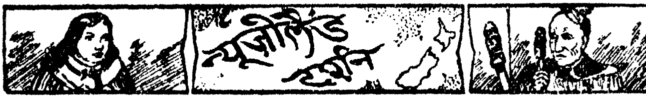
न्यूज़ीलैण्ड में सबसे अधिक सामान इङ्गलैण्ड (२,८१,८६,९५८ पौंड) से आता है। उसके बाद आस्ट्रेलिया (६९,४३,८३८ पौंड), संयुक्त राष्ट्र अमरीका (६७,३०,५०० पौंड), कनाडा (४५,४९,८०२ पौंड), डच पूर्वी द्वीप समूह (२२,३७,४६८ पौंड), जापान (१६२२२४९ पौंड), जर्मनी (८,६८,९९५ पौंड), लंका (८,१२,२६७ पौंड), भारतवर्ष (५,६९,१६४ पौंड), बेल्जियम (५,१८,५०९ पौंड) और स्वीडन (३,५१,४२७ पौंड) का है।

देश दर्शन

न्यूज़ीलैण्ड में डेरों का जीवन

न्यूज़ीलैण्ड के निवासी अपने डेरों में उतने ही सुखी रहते हैं जितने कि हम लोग अपने घरों में रहते हैं। डेरों का जीवन बड़ा सरल और सस्ता होता है। ग्रीष्म ऋतु में यह जीवन बड़ा ही सुखमय होता है। चाहे जैसी कड़ी वर्षा हो डेरों के भीतर पानी नहीं प्रवेश कर सकता। विकराल तूफान के आने पर जो कुछ हानि डेरों को होती है शीघ्र ही उसकी पूर्ति हो जाती है। पहाड़ियों पर यात्रा करने या तटीय प्रदेश और झीलों पर मछली का शिकार करने के लिये केवल दो कम्बल और एक डेरे की आवश्यकता होती है।

वनों, पर्वतों, चरागाहों और तटों पर काम करने वालों को डेरों में रहना पड़ता है। उन्हें बहुधा अपनी पीठ पर सामान लाद कर कठिन मार्ग होकर यात्रा करनी पड़ती है। उसे अपने हाथ किसी भी दुर्घटना का सामना करने के लिये खाली रखना पड़ता है। उसे घोड़े अथवा पशु की भाँति खुली हवा में काम करना पड़ता है परन्तु सुन्दर वायु में कठिन परिश्रम करने पर उसे भूक बहुत लगती है।



अधिक दिनों तक काम करने वालों या यात्रा करने वालों को अपने साथ भोजन-सामग्री, भोजन बनाने और पानी पीने के बर्तन, कागज़, किताब, क़लम, दावात, आवश्यक शस्त्र और सामान लादने के लिये घोड़े आदि भी रखने पड़ते हैं।

न्यूज़ीलैण्ड की सड़कें तथा मार्ग पहाड़ी होने के कारण बड़े कठिन होते हैं। घोड़ों पर लदे हुए सामान को बार बार सुधारना पड़ता है। बीच बीच में रुकना भी पड़ता है। जब किसी स्थान पर आराम करने के लिये लोग ठहरते हैं तो घोड़ों को पानी पिलाते हैं और उन्हें कुछ जंगली वनस्पति खाने को दे देते हैं या चरने के लिये छोड़ देते हैं। उसके बाद वह चाय पानी करते हैं और फिर अपना सामान लाद कर यात्रा करते हैं। कहीं कहीं मार्ग कठिन होने पर सामान घोड़ों पर से उतार कर थोड़ा थोड़ा करके ले जाना पड़ता है।

जब लोग किसी सुविधा वाले स्थान पर पहुंचते हैं तो कुछ दिनों के लिये डेरे डाल देते हैं। वह उस स्थान की भली भांति खोज करते हैं और बहुधा उनके हाथ अमूल्य वस्तुएँ तथा धन हाथ लग जाते हैं। उन्हें अपना

भोजन स्वयम् बनाना पड़ता है। मांस के लिये उन्हें चिड़ियों अथवा बनैले पशुओं का शिकार करना पड़ता है। भोजन सामग्री समाप्त हो जाने पर और शिकार न मिलने पर कभी कभी उन्हें उपवास भी करना पड़ता है। यह कष्ट झेलते हुये भी जब वह किसी रम्य तथा सुन्दर स्थान पर पहुँच जाते हैं तो अपनी थकाई तथा समस्त कष्ट भूल जाते हैं और उनमें नई स्फूर्ति आ जाती है।

न्यूज़ीलैंड में प्राण-हत्या करने वाले पशुओं का भय नहीं है। इसलिये लोग आनन्द के साथ किसी के भी पहाड़ी तथा विकट वन में डेरे डाल सकते हैं।

सत्य रूप में डेरों में जीवन व्यतीत करने वाले लोग देश की खोज करने वाले के नाम करने वाले और धरती के भीतर वाली वस्तुओं के पता लगाने वाले होते हैं। वह बहुधा ऐसे स्थानों पर पहुँच जाते हैं जहां मनुष्य वास नहीं करते। एक स्थान का काम समाप्त करके वह दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। सैकड़ों मील की यात्रा करने पर उन्हें उनकी इच्छानुसार स्थान शायद ही मिलता है।



न्यूज़ीलैंड के खोज करने वालों को बहुधा ४५ वर्ष के पश्चात् गठिया की बीमारी हो जाती है और फिर वह अपना काम करने से मजबूर हो जाते हैं।

रोटारुआ और गरम आश्चर्य भूमि

यह प्रदेश न्यूज़ीलैंड के उत्तरी द्वीप के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। इस भाग में आकलैंड और वेलिंग्टन नगरों से रेल तथा सड़कों द्वारा सरलता पूर्वक पहुँचाया जा सकता है। रोटारुवा का सुन्दर नगर रोटारुवा झील पर बसा हुआ है। रोटारुवा नगर को केन्द्रीय स्थान बना कर वैतामा की आश्चर्य जनक गुफाओं, वैकरेमोना झील और तोंगरिरो राष्ट्रीय पार्क का दर्शन भली भांति किया जा सकता है।

न्यूज़ीलैण्ड में प्रकृति ने अपनी सभी प्रकार की सुन्दरता को एकत्रित करने का प्रयत्न किया है। यहां सुन्दर पर्वत कंदराएँ, घाटियां, चोटियां, नदियां, प्रपात (झरने), झीलें, फियोर्ड गैसर, हिमागार, गरम पानी के सोते, सदा बहार बन और सरोवर के बाग़ हैं।

देश दर्शन

गैसर—इस शब्द का अर्थ उछलता हुआ जल है। ज्वालामुखी प्रदेशों में गैसर होते हैं। जब आग्नेय पर्वतों का काम मन्द होने लगता है तो गैसर का जन्म होता है। फव्वारों की तरह गैसरों का पानी बारी बारी से ऊपर उठता और नीचे गिरता रहता है। न्यूज़ीलैंड के उत्तरी द्वीप में बहुत से गैसर हैं। गैसर के पानी में बहुत से पिघले हुये खनिज पदार्थ भी मिले रहते हैं जब गैसर का पानी नली के भीतर रहता है तो ऊपरी पानी का तापक्रम प्रायः १७० अंश देखा गया है। १०० फुट की गहराई पर पानी का तापक्रम २६० अंश फारेन हाइट रहता है।

जब ज्वालामुखी पर्वत अधिक शान्त हो जाते हैं तो भीतरी गरम पानी नहीं खौलता उसका तापक्रम सौ सवा सौ अंश फारेनहाइट रहता है। यह सोते न्यूजीलैंड में बहुत हैं।

न्यूजीलैण्ड की आश्चर्य जनक भूमि लगभग १५० मील लम्बी और २० मील चौड़ी है। रोतोरुआ का पिघले हुये खनिज पदार्थ का सोता आश्चर्य जनक भूमि के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। इन सोतों की अद्भुत



क्वीन चारलोटे साउण्ड (न्यूज़ीलैण्ड की खाड़ी) का एक दृश्य ।

शक्ति माओरी लोगों को पहले से ही मालूम थी और वह उनका पानी अपने बीमारियों में प्रयोग करते थे। अब वहाँ सरकार की ओर से शफा खाने बना दिये गये हैं।

रोटोरुआ ज़िले का भ्रमण करते समय ६ झीलों का भ्रमण भी बड़ी सुगमता के साथ किया जा सकता है। वेराकी घाटी में वेराकी गेसर, हानमेर सोते, अरोहा सोता वेओतापू हेलेन्सविल्ले प्रपात, प्वीआ गरम सोते, मोटेरे के गरम सोते आदि दर्शनीय हैं।

गैसर तथा गरम सोतों के प्रदेश में सुन्दर माओरी जाति के लोग निवास करते हैं। यह लोग बड़े बुद्धिमान चतुर और हंसमुख होते हैं। वह अपने गावों में सुख के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हैं। उन्हें बिना मूल्य का सुन्दर गरम पानी प्रयोग के लिये मिलता है। वही उनकी औषधि है। उसी से वह अपने भोजन बनाते और दूसरे कार्य करते हैं। उन सोतों के पानी के प्रयोग करने के कारण उनके पास बीमारी कभी नहीं फटकती है। माओरी लोग इस गर्म प्रदेश में प्रकृति के साथ अपना सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं।

देश दर्शन

संसार के लोग झरनों और सरोवरों को देखने जाते हैं तो उनकी कला देख कर आश्चर्य से चकित हो जाते हैं। कहीं तो उन्हें उछलता हुआ बलबलाता चश्मा मिलता है तो कहीं गरम सोता बहता है। कहीं गरम कीचड़ बलबलाती खिचड़ी जैसी पकती दिखाई पड़ती है तो कहीं गरम पानी के छोटे सरोवरों में बच्चे कुलेलें करते दिखाई पड़ते हैं। भाँति भाँति की बीमारियों से ग्रसित लोग इन सोतों के पास जाते हैं और उनके पानी तथा कीचड़ से स्नान करके वह उन बीमारियों से मुक्ति पाते हैं। सचमुच ही यह संसार की एक बड़ी आश्चर्यजनक भूमि है।





माओरी जाति के रीत-रिवाज

माओरी लोग बड़े अंध विश्वासी होते हैं। उनके कुछ रिवाज तो बड़े अनोखे हैं और कुछ बच्चों के से हैं। तापू (पवित्र) का विश्वास उनमें बहुत है वह जिस वस्तु, स्थान या मनुष्य को तापू समझते हैं उसे किसी को छूने नहीं देते। यह बात हमारे देश में भी किसी हद तक प्रचलित है। माओरी सरदार सदैव पवित्र माने जाते हैं। अब पवित्रता का विश्वास बहुत कुछ कम हो गया है और लोग पैसा प्राप्त करने के लिये पवित्र वस्तुओं का प्रयोग करते हैं वरन् प्राचीन काल में माओरी लोग पवित्र वस्तु की रक्षा में अपने प्राण निछावर कर देते थे परन्तु वह उन्हें विदेशियों द्वारा छू जाना नहीं सहन कर सकते थे।

तापू से भी अधिक दृढ़ रिवाज मूरू का है। मूरू का अर्थ मूँड लेना अथवा लूट लेना है। यदि किसी मनुष्य को अचानक दुर्घटना के कारण चोट लग जाती है या वह कष्ट में पड़ जाता है तो दूसरे माओरी लोग उसके साथ प्रेम प्रगट करने के लिये उसके घर पर जाते हैं।

वहीं भोजन करते हैं और प्रायः उसकी समस्त सम्पत्ति उठा या लूट ले आते हैं। पाकेहा माओरी नामक पुस्तक में "मूरु" रिवाज का भली भांति वर्णन किया गया है। पाकेहा का अर्थ अजनबी का होता है।

एक बार एक सरदार का पुत्र अग्नि में जल गया। शीघ्र ही उसके जाति के लोग उसकी सम्पत्ति लूटने लगे। यहां तक की उसकी नावों का सामान लूट लिया और उन्हें उलट दिया। यहां तक कि उसके पास कुछ भी खाने को न रह गया। यदि कोई मनुष्य इस रिवाज को नहीं मानता तो वह अभागा माना जाता है और जाति के सभी लोग उसे नीची दृष्टि से देखते हैं।

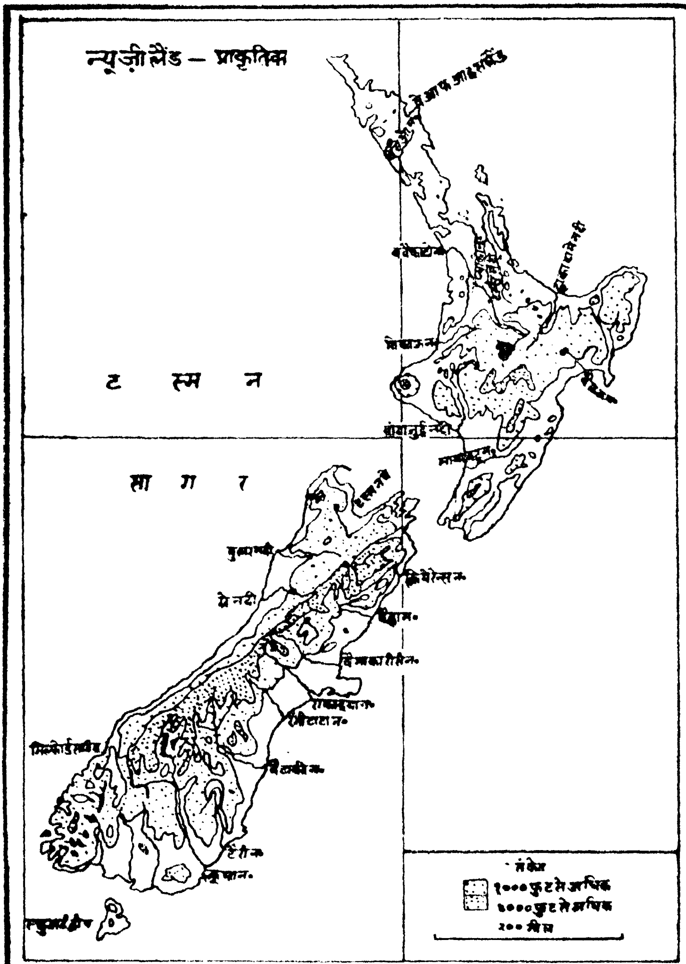
एक और अद्भुत रिवाज माओरी लोगों में यह था कि जब किसी सरदार अथवा उसके किसी समीपवर्ती सम्बन्ध की मृत्यु होती थी तो शीघ्र ही उसी की अवस्था का एक गुलाम अथवा नौकर कत्ल कर दिया जाता था जिससे उस नौकर की आत्मा उस सरदार की आत्मा के साथ ही साथ रहे और किसी दूसरे संसार में भी उसकी सेवा करती रहे। एक बार एक माओरी सरदार के युवक भतीजे की मृत्यु हुई शीघ्र ही

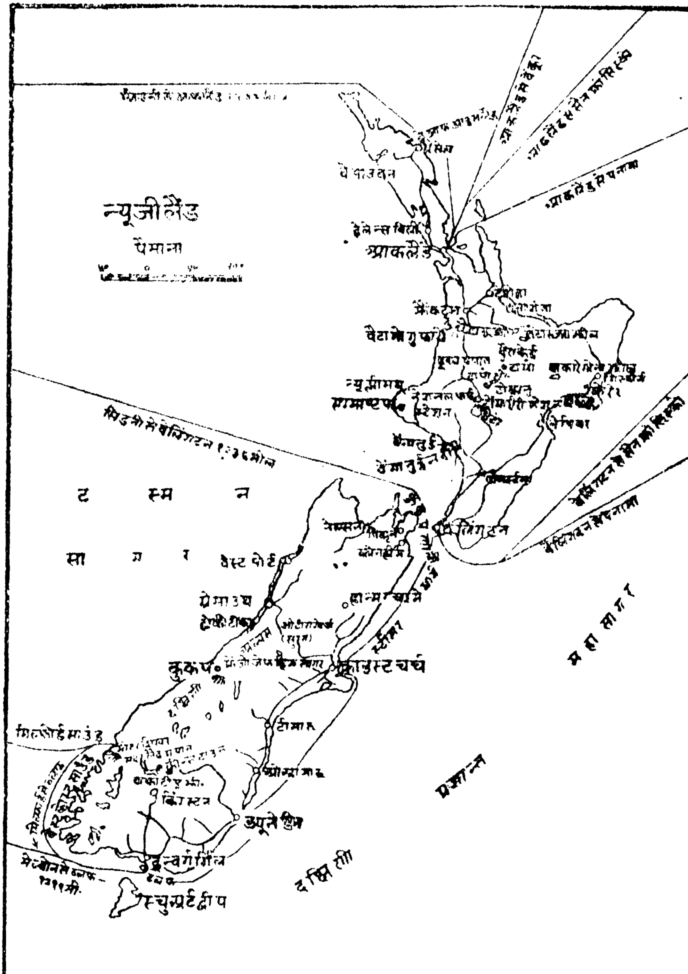
एक युवक नौकर के बलिदान की तयारी की गई। वह बेचारा बेमौत का शिकार हो रहा था। यह कहानी उस समय की है जब कि अँग्रेज़ तथा धर्म प्रचारक लोगों के पैर न्यूज़ीलैण्ड में जम चुके थे। मिस्टर मर्सडन धर्म प्रचारक उस माओरी सर्दार के मित्र थे उन्होंने नौकर युवक को छिपा लिया और माओरी सरदार को बहुत समझा बुझा कर नौकर के प्राण बचाये परन्तु वह सरदार आजन्म दुःखी रहा और कहता रहा कि मेरे भतीजे की आत्मा की सेवा करने वाला कोई नहीं गया। अतः वह बड़ी दुःखी होगी और मेरा भतीजा फिर कभी लौटकर इस देश में जन्म नहीं लेगा।

भारतवर्ष की भांति न्यूज़ीलैण्ड में भी सती का रिवाज प्रचलित था। जब माओ या किसी माओरी की मृत्यु होती थी तो उसकी एक या अधिक स्त्रियां पति के साथ ही साथ अपने जीवन का भी अंत कर देती थीं। आजकल पति के साथ ही साथ अपने जीवन का भी अंत कर देती थीं। आज कल पति के साथ प्राण हत्या करने का रिवाज बन्द हो गया है और स्त्रियां अपने पति की मृत्यु होने पर अपने सिरों को ढक लेती हैं और कई दिनों

तक रोती तथा विलाप करती रहती हैं। मृतक संस्कार को माओरी लोग "तांगी" कहते हैं और मरने के पश्चात् कई दिनों तक रोने, दुःख प्रगट करने, भोज देने आदि के भिन्न भिन्न संस्कार हुआ करते हैं। माओरी लोग अपने सरदार की याद में सुन्दर नक्काशी की हुई स्मृतियाँ तयार करते हैं।

माओरी लोगों के भी गोदना गोदाने का रिवाज बहुत है। वह गोदना गोदाना प्रायः अपने धर्म का एक भाग सा मानते हैं और चेहरे, गर्दन, हाथ, पांव और प्रायः समस्त शरीर पर गोदना गोदाते हैं। उनका गोदना संस्कार होता है। वह इसे एक प्रकार की सजावट मानते हैं। गोदने में वह भांति भाँति के पशुओं और चित्रों की रूपरेखा खिंचवाते हैं। इस संस्कार में प्रायः बड़ा कष्ट होता है फिर भी लोग इसे खुशी खुशी करते हैं।


न्यूज़ीलैंड — प्राकृतिक
ट स्मन
सा ग र
संकेत
१००० फुट से अधिक
२०० मील



न्यूजीलैंड
पैमाना
आकलैंड
ट स्म न
सा ग र
वेस्ट पोर्ट
क्राइस्ट चर्च
वेलिंगटन
प्रशान्त
महासागर
दक्षिणी
स्टुअर्टद्वीप



राजनैतिक विभाग

पहले न्यूज़ीलैंड न्यू अलस्टेर और न्यू मन्स्टेर दो प्रान्तों में बँटा हुआ था। उसके बाद दूसरा विधान बना और उसके अनुसार न्यूज़ीलैंड आकलैंड, न्यूप्लाई माउथ, वेलिंग्टन, नेल्सन, कटरबरी और ओंटागो नामक ६ प्रान्तों में बांटा गया।

१८७६ ई० में काउन्टी, म्यूनिस्पल कार्पोरेशन ऐक्ट बनाया गया। इस विधान के अनुसार समस्त देश स्थानीय विभागों में बांट दिया गया है।

इस समय न्यूज़ीलैंड में १२६ काउंटी १२६ बरा, ४० वह कस्बे वाले ज़िले जो काउण्टी के भाग नहीं हैं और २६ काउण्टी के भाग वाले कस्बों के ज़िले, ३५ सड़क वाले नगर, ४८ नदियों वाले नगर, ६४ लैण्डड्रेनेज जिले, ४१ बन्दरगाह ६४ वाले जिले, ४६ अस्पताल वाले ज़िले, ४१ बिजली वाले ज़िले, ३ नगर और उसके पास पड़ोस वाले जिले, १ ट्रामवे ज़िला, ५ स्थानीय रेलों का ज़िला, ६ पानी पहुँचाने वाले जिले, १८ खास उँचले प्रदेश तथा पहाड़ी मार्ग वाले जिले, ३७ फाएर (आग

वाले) जि़ले, ४५ रैबिट (चूहे) जिले और १ गैस के प्रकाश वाला जिला है ।

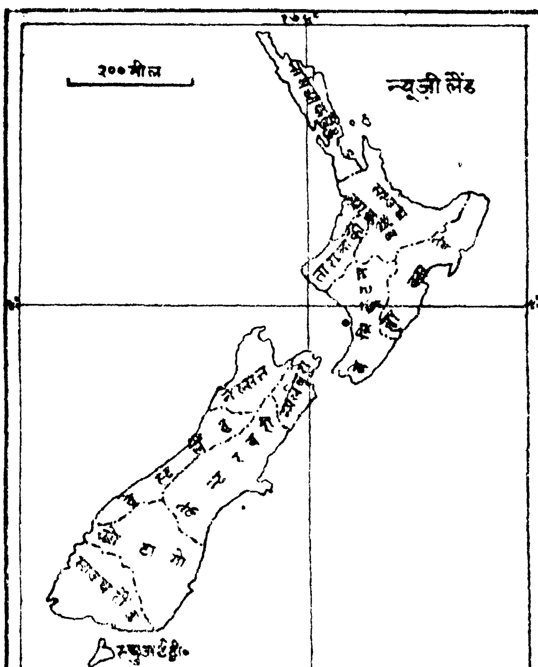
काउंटी का शासन-प्रबन्ध काउंटी कौंसिल के हाथ में होता है, जिसके ६ से १२ तक सदस्य होते हैं। टाऊन वाले जिलों का प्रबन्ध टाऊन बोर्ड के हाथ में रहता है जिसके ५ से ७ तक सदस्य होते हैं। सेड वाले जिलों का प्रबन्ध एक सभा के हाथ में रहता है। उस सभा के कम से कम चार और अधिक से अधिक ९ सदस्य रहते हैं। नदी वाले जिले का शासन नदी जिलों की सभा के हाथ रहता है। लैंड ड्रेनेज जिलों का शासन ट्रस्टी लोगों के बोर्ड के हाथ में रहता है। पानी पहुंचाने वाले जिलों का प्रबन्ध पानी पहुँचाने वाली बोर्ड करती है।

इसी प्रकार सभी जिलों का प्रबन्ध किसी न किसी बोर्ड अथवा सभा के हाथ में है।

शासन की दृष्टि से न्यूज़ीलैंड काउण्टी बरा, और स्वतंत्र टाउन जिलों में विभाजित है। बरा का शासन उसकी कौंसिल और मेअर के हाथ में रहता है।

न्यूज़ीलैंड का गवरनर जनरल आवश्यकतानुसार

स्थानीय प्रजा की सम्पत्ति से नये विभाग कर सकता है। गवरनर जनरल (और उसकी कौंसिल) समस्त देश की स्थानीय विभागों को कौंसिल तथा सभाओं पर अधिकार रखता है उसे किसी भी कौंसिल में परिवर्तन आदि करने का विशेषाधिकार प्राप्त है।



संक्षिप्त इतिहास

संसार के और दूसरे देशों की भांति न्यूज़ीलैण्ड का प्राचीन इतिहास भी उनके किस्से कहानियों और रीति-रिवाज़ों में पाया जाता है। जब १६४२ ई० में सर्वप्रथम प्रसिद्ध डच मल्लाह अबेल तस्मान ने न्यूज़ीलैंड की खोज की तो वहां पोलीनेसियन जाति के लोग रहते थे जिन्हें मओरिस कहते हैं। मओरिस जाति ने न्यूज़ीलैंड की खोज इससे कई सदियों पहले की थी। मओरिस जाति के लोग कब और कहाँ से आये इसका भी कोई उल्लेख कहीं नहीं है। कहा जाता है कि मओरिस जाति के लोग मलय जाति के हैं।

प्राचीन गाथाओं से पता चलता है कि मओरिस लोग पहले हवैकी द्वीप में रहते थे। एक बार उनके एक सरदार ने एक बड़ी समुद्री यात्री की और वह न्यूज़ीलैंड के उत्तरी द्वीप के किनारे आ लगा। उसने न्यूज़ीलैंड का भ्रमण किया और उसकी सुन्दरता देख कर अपने देश में वापस गया फिर कुछ लोगों को फुसला कर अपने साथ नावों का एक बेड़ा लेकर न्यूज़ीलैण्ड आया। उन नावों का नाम अब भी मओरिस लोग बड़े प्रेम तथा भक्ति से स्मरण करते हैं। मओरिस जाति के प्राचीन

हवाकी द्वीप का अब भी पता नहीं लग पाया है। परन्तु मातृ भूमि की स्मृति में दक्षिणी सागर के बहुत से द्वीपों का नाम हवाकी रखा गया है। मआरिस जाति के लोग पोलीनेशियन भाषा बोलते हैं।

प्राचीन सभ्यता

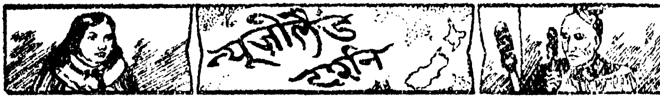
प्राचीन माओरी लोग प्राचीन जङ्गली जातियों की अपेक्षा बड़े सभ्य थे। कैप्टन कुक ने उन्हें गावों में झोपड़ों में रहते पाया था। यह झोपड़े लकड़ी और घास के बने थे। वह अपने देश के पटसन को कात बुन कर कपड़े बनाते थे और वृक्षों की छाल के रंग से रंगते थे। वह पत्थर के औज़ार बनाते थे और अपना भोजन अग्नि में पका कर खाते थे। वह खेती करते थे और आपत्ति काल के लिये भोजन एकत्रित करके रखते थे। वह अपनी सम्पत्ति सम्बन्धी नियम भी बनाये हुये थे। वह बड़े लड़ाकू थे। इसलिये वह गढ़ बना कर रहते थे। यद्यपि उनके लिखावट की कोई भाषा न थी तो भी उनके मध्य उनकी गीत तथा कहावतें बहुत प्रचलित थीं उन्होंने अपने द्वीप के सभी वृक्ष, पौधे, चिड़ियों और कीड़े मकोड़ों के नाम रखे थे। उन्होंने तारागणों का भी

नामकरण किया था। वह लोग खेलना-कूदना और खेल तमाशों का भोग करना भी भली भांति जानते थे। उनके बहुत से खेल हमारे वर्तमान खेलों से मिलते जुलते थे। पतंग उड़ाना, लाठियों पर चलना, कुश्ती लड़ना और आंख-मुंदौला आदि खेल उनके समय में भी प्रचलित थे।

वह अपनी स्त्रियों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार करते थे। वह मनुष्य जाति के भक्षण करने वाले भी थे। जब वह किसी युद्ध में अपने शत्रुओं को पकड़ते थे तो उन्हें मार कर खा जाते थे। शत्रु को मार कर खा जाना वह बड़ा पवित्र समझते थे। उनका विश्वास था कि ऐसा करने से उनमें और अधिक शक्ति आ जाती है। उनका कोई धर्म न था वरन् उनकी अपनी अजीब पौराणिक गाथायें थीं। वह आवागमन में विश्वासकरते थे।

योरुपीय लोगों द्वारा खोज

१३ दिसम्बर १६४२ ई० को अबेल जान्सेन तस्मान नामक मल्लाह ने न्यूज़ीलैंड का पता लगाया। वह बटाविया से १४ अगस्त १६४२ ई० में चला था। उसने टस्मानिया द्वीप का नामकरण अपने नाम पर किया था।



और आगे पूर्व की ओर बढ़ने पर उसने न्यूज़ीलैंड के दक्षिणी द्वीप के पश्चिमी तट को देखा।

तस्मान का विचार था कि न्यूज़ीलैंड ध्रुव प्रदेश की भूमि है और यह स्चावटेन द्वारा नामकरण किये हुये स्टेटनलैंड का एक भाग है इसी कारण उसने न्यूज़ीलैंड का नाम भी स्टेटनलैंड रखा। परन्तु तीन मास के बाद ही स्चावटेन के स्टेटनलैंड का पुनः पता लगा और उसकी घोषणा होने पर तस्मान के स्टेटनलैंड का नाम बदल कर न्यूज़ीलैंड रक्खा गया। इसी नाम से आज तक यह द्वीप न्यूज़ीलैंड के नाम से प्रसिद्ध है। तस्मान इस द्वीप के तटों से होकर आगे बढ़ा ओर गोल्डन खाड़ी में ठहरा। उसका उसने मर्डरर्स खाड़ी नाम रक्खा था क्योंकि वहाँ के निवासियों ने उसकी एक नाव पर आक्रमण करके चार गोरे मनुष्यों की हत्या कर डाली थी। उसके बाद तास्मन उत्तरी द्वीप के पश्चिमी तट की ओर गया और उत्तरी द्वीप के उत्तरी पश्चिमी किनारे पर पहुँच कर उसका नाम केप मैरिया वान डीमेन रक्खा। थ्री किंग्स (तीन राजों नामक द्वीप) द्वीपों को देख कर न्यूज़ीलैंड की धरती पर बिना उतरे ही न्यूज़ीलैण्ड से चला गया।

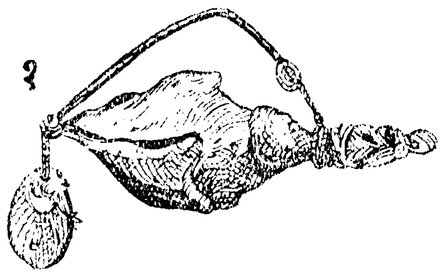
तस्मान के पश्चात् कैप्टन कुक दक्षिण की ओर दक्षिण महाद्वीप की खोज में गया। वह सुमायटी द्वीपों से चला था। ६ अक्तूबर १७६९ ई० को उसने यंग निक्स नामक अंतरीप को देखा और ८ अक्तूबर को वह पावर्टी खाड़ी में उतरा। उसके पश्चात् उसने उत्तरी दक्षिणी द्वीपों और स्टुअर्ट द्वीपों का चक्कर लगाया और फिर ३१ मार्च १७७० ई० को वह आस्ट्रेलिया के लिये प्रस्थान कर गया।

कुक के पश्चात् फिर बहुत से लोगों ने न्यूज़ीलैण्ड का भ्रमण किया जिसमें निम्नलिखित लोग उल्लेखनीय हैं :—

एम० डे सर्वीले ने न्यूज़ीलैंड के उत्तरी-पूर्वी तट को १२ दिसम्बर १७७९ में देखा था। एम० मैरियन ड्यू फ्रस्ने ने १७७२ ई० में भ्रमण किया था। कैप्टन वान कूवर और ब्राथन ने १७९१ ई० में चक्कर लगाया था कैप्टन रेवन ने १७९२-९६ ई० में यात्रा की थी। अलेजन्द्रो मलस्वीना और जोज़े डे बस्टामिंटे गेरा ने १७९३ ई० में यात्रा की थी। लेफ़्टिनेंट हैन्सन की यात्रा १७९३ ई० में हुई थी।

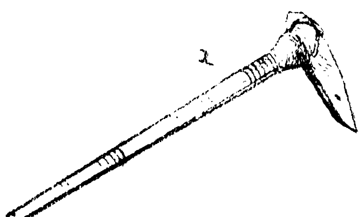
मओरी जाति के अस्त्र, सामान तथा कारीगरी

१



माओरी जाति का एक अस्त्र

२



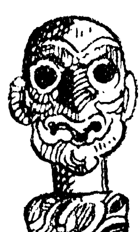
एक कुल्हाड़ी

५



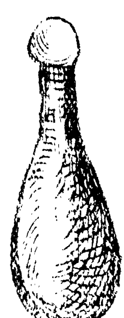
एक युद्ध अस्त्र

३

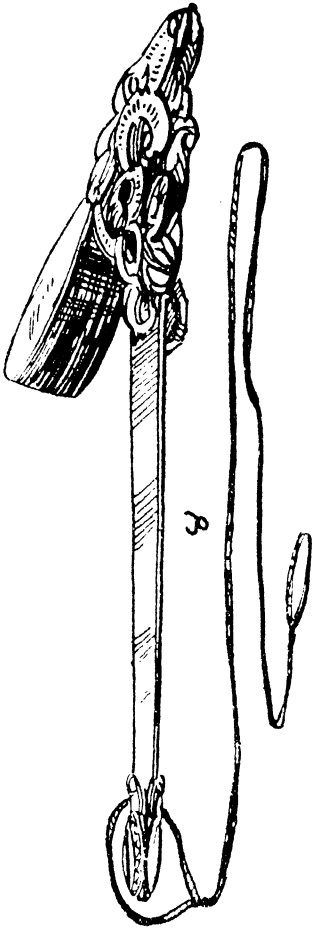


सिर के चित्र की कारीगरी का एक नमूना

४



एक छोटा गदा



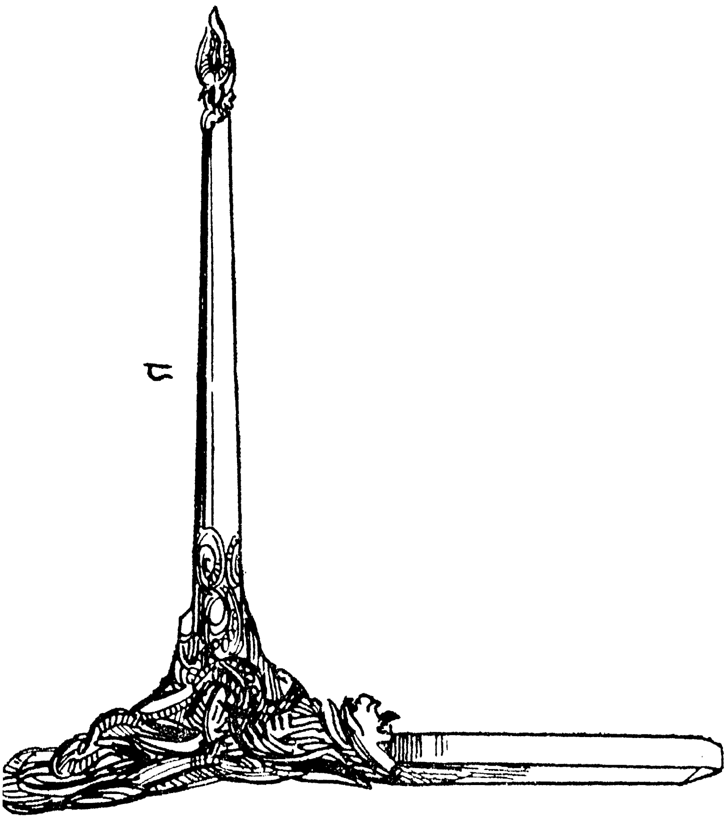
४

एक युद्ध अस्त्र

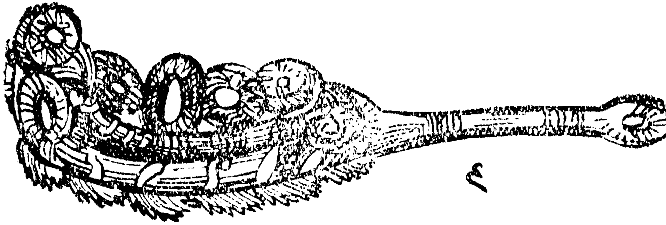


७

एक मूर्ति की नक्काशी

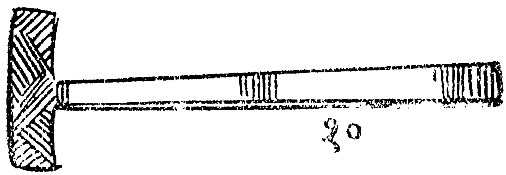


माओरी लोगों की एक कुल्हाड़ी



९

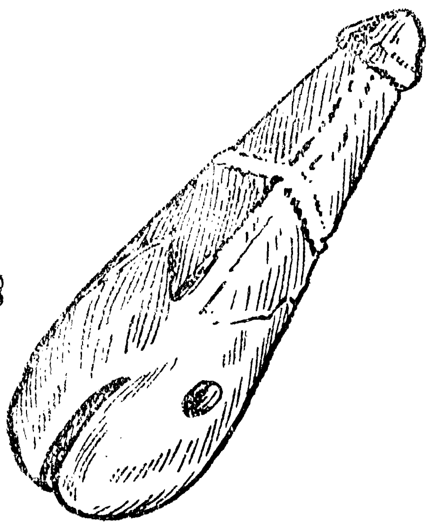
एक नक्काशी किया हुआ सुन्दर बर्तन



१०

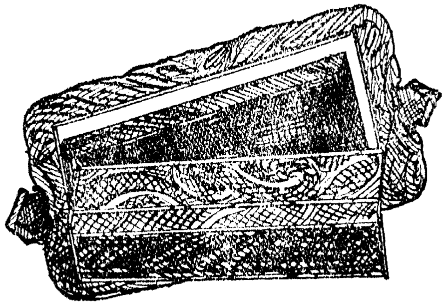
एक युद्ध अस्त्र

११



माओरी लोगों का गदा

१२

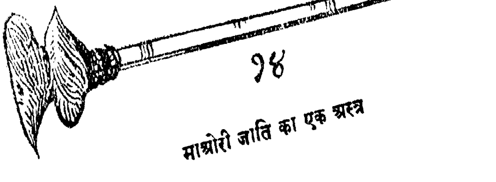


माओरी लोगों का एक संदूक



१३

माओरी लोगों का एक अस्त्र



१४

माओरी जाति का एक अस्त्र



माओरी कैतका बुन रहा है ।



माओरी सरदार अपने भेष में अपने घर के सामने खड़ा है ।

योरुपीय बस्तियों का बसना

१७९२ ई० में कैप्टन रेवेन ने कुछ लोगों को दक्षिण द्वीप के पश्चिमी तट के फैम्माइल बन्दरगाह पर सील मछली के शिकार के लिये छोड़ा था। वह लोग १२ महीने तक वहां रहे। उसके बाद न्यूज़ीलैंड के तट पर कई एक व्हेल मछली के शिकार के स्टेशन बनाये गये। १८१४ ई० में हाल और केंडल नामक प्रचारक न्यूज़ीलैंड पहुँचे। कुछ दिनों तक रहने के बाद वह न्यूसाउथ वेल्स लौट गये। उसके बाद उसी वर्ष १९ नवम्बर को वह फिर मि० सम्यूल मस्डेन के साथ न्यूज़ीलैण्ड गये। सम्यूल मस्डेन न्यू साउथ वेल्स की सरकार के पादरी थे। उन्होंने १८१४ ई० के क्रिस्मस डे (बड़े दिन) को न्यूज़ीलैण्ड में प्रथम बार ईसाई धर्म की धर्म शिक्षा दी थी। वह २३ मार्च १८१५ ई० को सिडनी लौट कर गये थे। उन्होंने हाल, केंडाल और किंग महाशयों को वहां छोड़ दिया था जिन्होंने रङ्गीहोवा स्थान पर अपना प्रथम प्रचार केन्द्र स्थापित किया था।

१८२५ में न्यूज़ीलैंड के भिन्न भिन्न स्थानों में तीन बार नई बस्तियों के बसाने का प्रयत्न किया गया परन्तु

सफलता नहीं प्राप्त हुई। उसके बाद कुछ वर्षों तक ह्वेलिंग स्टेशनों के आस पास ही बस्तियां रहीं। धीरे धीरे योरुपीय लोग न्यूज़ीलैंड के कुछ भिन्न भिन्न भागों में बस गये और उन्होंने वहाँ की स्त्रियों से अपना ब्याह भी कर लिया। १८३९ ई० में इङ्गलैंड में न्यूजीलैंड कम्पनी बनाई गई जिसने वहां नई बस्तियों के बसाने वाली योजना के अनुसार प्रथम जन-समूह निकल्सन बन्दरगाह पर पहुँचा और वेलिंगटन नामक नगर बसाया गया। उसके बाद नेल्सन, तारानाकी, ओटागो और कंटरबरी की बस्तियां बसाई गईं।

ब्रिटिश शासन

१८३३ ई० में मिस्टर बस्बी न्यूज़ीलैंड के ब्रिटिश रेज़ीडेन्ट नियुक्त किये गये। उनका केन्द्र कोरोरारेका में था जिसे अब रसेल कहते हैं। २९ जनवरी १८४० ई० को कैप्टन विलियम हाब्सन द्वीपों की खाड़ी में ब्रिटिश रेज़ीडेन्ट होकर पहुँचे। उन्हें न्यूज़ीलैंड की प्रजा की सलाह से न्यूज़ीलैंड में महारानी विक्टोरिया के साम्राज्य की घोषणा करने तथा वहां शासन आरम्भ करने की शक्ति प्रदान की गई थी। उन्होंने न्यूजीलैंड के

सर्दारों तथा निवासियों के साथ वैतांगी की संधि की। इस संधि में ६ मास के भीतर ५१२ न्यूजीलैंड तथा निवासियों के हस्ताक्षर जोड़े गये। इस समझौते के अनुसार न्यूजीलैंड ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया और वहाँ की धरती वहां के सर्दारों तथा निवासियों के अधिकार में ही छोड़ दी गई। ब्रिटिश सरकार की राजधानी वैतेमाता (आकलैंड) में स्थापित की गई। २१ मई १८४० ई० में कैप्टन हाब्सन ने ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत न्यूज़ीलैंड की सरकार की घोषणा किया।

विधान

पहले न्यूजीलैण्ड का शासन गवरनर जनरल के हाथ में था जो केवल ब्रिटिश साम्राज्य का उत्तरदायी था। गवर्नर के आधीन सलाह कारिणी समिति और कानून बनाने वाली सभा थी।

३० जून १८५२ ई० को सम्राट की पार्लियामेंट ने न्यूजीलैण्ड के लिये एक विधान बनाया जिसकी घोषणा वहाँ १७ जनवरी सन १८५३ ई० को की गई। उस विधान के अनुसार एक लेजिस्लेटिव (कानून बनाने

वाली) धारा सभा तथा एक प्रतिनिधियों की सभा बनाई गई ।

२७ मई सन् १८५४ ई० को न्यूजीलैण्ड के सार्वजनिक सभा की प्रथम बैठक हुई । इस सभा के शासन समिति के सदस्य पार्लियामेंट के उत्तरदायी न थे । १८५६ ई० में उत्तरदायी सरकार का प्रथम मन्त्री मंडल बनाया गया ।

१६०७ ई० में न्यूज़ीलैण्ड को सम्राट की घोषणा के अनुसार डोमीनियन (उपनिवेश) राज्य बनाया गया । १६१७ ई० में गवर्नर जनरल और प्रधान सेनापति कर दिया गया ।

न्यूजीलैण्ड का गवर्नर जनरल शासन-समिति की सलाह से शासन करता है । यदि किसी सम्बन्ध में वह समिति से सहमत नहीं होता है तो वह अपने विशेषाधिकार से समिति की सलाह के विरुद्ध काम कर सकता है परन्तु गवर्नर जनरल को ऐसा करते समय शीघ्र इङ्गलैण्ड की सरकार को सूचना दे देनी होगी । समिति के सदस्यों को पूर्ण अधिकार प्राप्त रहता है कि वह

ऐसे समय अपनी सलाह का उल्लेख बैठक की कार्रवाई में करा दें।

प्राण दण्ड देते समय अथवा उसकी क्षमा प्रदान करते समय भी गवरनर जनरल को अपने समिति की सलाह लेनी परम आवश्यक होती है। इक्जिक्यूटिव समिति में गवर्नर जनरल को मिलाकर १५ सदस्य हैं।

सबसे पहली धारा सभा २४ मई १८५४ ई० को बुलाई गई थी और उसमें १४ सदस्य सरकार की ओर से रक्खे गये थे। १८६१ ई० के पहले इस सभा के सदस्य जन्म भर के लिये चुने जाते थे परन्तु उसके पश्चात् सदस्य होने की अवधि ७ वर्ष कर दी गई।

१६१४ ई० के धारासभा के नियम के अनुसार धारा सभा प्रजा द्वारा चुने गये सदस्यों की बनाई गई। गवर्नर जनरल ३ गोरी सदस्यों की नियुक्ति सभा में कर सकता है। इस सभा के इस समय ४२ सदस्य हैं।

प्रतिनिधि सभा में ८० सदस्य हैं जिसमें ७६ योरुपीय और ४ माओरिस हैं। यह सदस्य पार्लियामेंट के सदस्य कहलाते हैं। इस सभा के सदस्यों को ६७५० रु० वार्षिक वेतन रूप में मिलता है।



न्यूज़ीलैंड से सम्बन्ध रखने वाले दूसरे द्वीप

थ्री किंग्स द्वीपसमूह

इस द्वीप समूह का यह नाम टस्मान ने इस कारण रक्खा था कि उसने इनका पता एपिफानी के त्योहार के दिन लगाया था। यह द्वीप बसे नहीं हैं और उत्तरी द्वीप के उत्तरी कोण पर स्थित हैं। यह द्वीप मैरिया वान डीमेन अंतरीप से ३८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर हैं।

आकलैंड द्वीपसमूह

इस द्वीप का १८ अगस्त सन् १८०६ ई० को कैप्टन इब्राहीम ब्रिस्टोव ने पता लगाया था और लार्ड आकलैंड के नाम पर इसका नाम आकलैंड द्वीप रक्खा था। यह ब्लफ बन्दरगाह से २९० मील दक्षिण की ओर स्थित है। इनमें बहुत से अच्छे बन्दरगाह हैं। रास बन्दरगाह बड़ा ही सुन्दर तथा सुरक्षित है। दक्षिण की ओर पूर्व से पश्चिम तक समुद्री मार्ग है। जिसका

नाम आदम्स जल संयोजक तथा कार्नली बन्दरगाह है। इसमें सबसे बड़े द्वीप की लम्बाई २७ मील और चौड़ाई १५ मील है। यह द्वीप बड़ा पहाड़ी है और समुद्र धरातल से २ हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित है।

कैम्पबेल द्वीप

यह आकलैंड द्वीप से १५० मील दक्षिण-पूर्व स्थित है। इसका पता १८१० ई० में फ्रैड्रिक हजेल्बर्ग ने लगाया था। इस द्वीप का घेरा लगभग ३० मील है। इस द्वीप में अच्छे बन्दरगाह हैं।

ऐएटीपोडेस द्वीपसमूह

यह बिखरे द्वीप उत्तर और दक्षिण की ओर ४ या ५ मील में फैले हैं। उनका स्थान ४६ दक्षिणी अक्षांश और १७८ पूर्वी देशान्तर है।

बाउंटी द्वीपसमूह

कैप्टन ब्लाई ने इन द्वीपों का पता १७८८ ई० में बाउंटी नामक जहाज से लगाया था। इन द्वीपों की संख्या १३ है। यह ४७ अंश दक्षिणी अक्षांस और १७६ अंश पूर्वी देशान्तर पर स्थित हैं।



स्नेअर्स द्वीपसमूह

यह द्वीप स्टुर्ट द्वीप समूह के ५६ मील दक्षिण-पश्चिम स्थित हैं। इनमें ६ छोटे छोटे द्वीप शामिल हैं जिनका क्षेत्रफल ६०० एकड़ है।

कर्माडेक द्वीपसमूह

यह चार द्वीप न्यूज़ीलैंड में २१ जुलाई सन् १८८७ ई० की घोषणा के अनुसार मिलाये गये हैं। इनमें मुख्य द्वीप संडे है जो आकलैण्ड से ६०० मील की दूरी पर है। मकाले द्वीप का नाम लार्ड मकाले के पिता के नाम पर मकाले रक्खा गया है। कार्टिस द्वीप का लैफ्टिनेन्ट वाट ने १७८८ ई० में पता लगाया था। शेष द्वीपों का पता १७९१ ई० में रिअर-एडमिरल डे ब्रूनी ने लगाया था। एडमिरल ने समस्त द्वीपों का नाम कर्माडेक रक्खा। राओल द्वीप का नाम इस कारण संडे हुआ कि उसकी खोज संडे (रविवार) को हुई थी।

यह द्वीप ज्वालामुखी है। इनमें से दो द्वीप अब भी जाग्रत हैं। यहां की जलवायु न्यूज़ीलैंड की अपेक्षा कुछ गरम है। वर्षा अच्छी होती है। संडे द्वीप का क्षेत्रफल

७२०० एकड़, हेराल्ड द्वीपसमूह का ८५ एकड़, मकाले द्वीप का ७६४ एकड़, कार्टस द्वीपों का १२८ एकड़ और एस्पेरेन्स का १२ एकड़ है। कुल क्षेत्रफल ८२० एकड़ है। इन द्वीपों की धरती लावा से बनी है इस कारण इनमें बनस्पति बहुत है। पानी की कमी है। इन द्वीपों में ४ झीलें हैं उनमें ३ झीलें मीठे पानी की हैं परन्तु झीलों तक पहुंचना कठिन है।

१८७८ ई० के पश्चात् संडे द्वीप में निवास करने के लिये बेल कुटुम्ब गया था और वह कई वर्षों तक वहां रहा। १८८९ ई० में पुनः बस्ती बसाने का प्रयत्न किया गया। १८९० ई० से नवम्बर सन् १८२६ ई० तक यह द्वीप निर्जन रहे। १९२६ ई० में इँगलैंड के सम्राट की ओर से ३ व्यक्ति संडे द्वीप में रहने के लिये गये।

कुक और दूसरे द्वीप १९०१ में न्यूज़ीलैण्ड में मिलाये गये

रारोटोंगा—यह कुक द्वीपों में सबसे अधिक उपजाऊ तथा धनी द्वीप है। यह सुन्दर द्वीप समुद्र धरातल से ३ हज़ार फुट की ऊँचाई पर है। यहाँ की भूमि उपजाऊ



है और बनस्पति बहुत है। यहां दो छोटे बन्दर-गाह हैं।

मांगैअ—यह द्वीप कुक द्वीप समूह का सबसे दक्षिणा पूर्वी द्वीप है और ज्वालामुखी पर्वतों के उद्‌गार से बना है। इसका घेरा ३० मील है। यहां नारियल, केला नारंगी, नींबू, चकोतरा और दूसरे फल होते हैं।

अतीयु—यह बड़ाई तथा आकार में मांगैअ द्वीप की भांति है। यह मूँगे की चट्टानों से बना है। इस द्वीप के मध्यवर्ती भाग में नारियल, केला, नारंगी, कहवा की उपज होती है।

मायूके या पैरी द्वीप—यह द्वीप गोलाकार है और रारोतोंगा के उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। यह बड़ा उपजाऊ है।

मितिआरो—यह एक निचला द्वीप है और तीन चार मील लम्बा और एक मील चौड़ा है।

हेर्वे द्वीप समूह—इसमें दो द्वीप हैं। १—मानवाए २—ते-आयुओ-तू। यह द्वीप एक पहाड़ी चट्टान से घिरा है जिसका घेरा १०½ मील है।

टाकूटेआ—यह एक छोटा प्रवाल द्वीप है। इसका

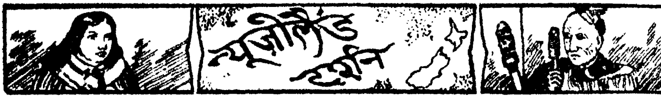
क्षेत्रफल लगभग एक मील है। यह द्वीप रारोतोंगा से १२० मील की दूरी पर है स्थित है।

एतूताकी—इस द्वीप का तट समतल है। तट पर नारियल तथा दूसरे फलों के बृक्ष हैं। ऊँचे स्थानों पर सुन्दर खेलने के घास तथा फूलों के मैदान हैं। इसका घेरा १८ मील है।

नीवे या सैवेज (जंगली) द्वीप—तोंगा के ३०० मील पूर्व में स्थित है। यह एक प्रवाल द्वीप है और ३६ मील के घेरे में है। इसकी ऊँचाई २०० फुट है। यह द्वीप उपजाऊ है और गर्म देशों की उपज होती है। यहां रुई उगाने का उद्योग किया जा रहा है।

पामर्स्टन द्वीप—यह द्वीप नीवे ४५० मील पूर्व और कुक द्वीप समूह के एतूताकी द्वीप से २२० मील की दूरी पर है। यहां की भूमि उपजाऊ है। यह कुछ अच्छी कड़ी लकड़ी पाई जाती है।

सुवारो द्वीप—यह आपिआ से ५०० मील पूर्व की ओर स्थित है। आपिआ नगर पश्चिमी समोआ द्वीप की राजधानी है। इसका घेरा ५० मील, आकार त्रिभुजाकार है यह एक प्रवाल द्वीप है। यहां लगभग



आध मील चौड़ी पहाड़ी से घिरी हुई एक झील है जो ८ मील लम्बी और ६ मील चौड़ी है। यहां अभी मानव जाति का वास नहीं है।

पुका पुका द्वीप (डांगेर) यह समोआ द्वीपों से ५०० मील की दूरी पर है। इसमें बहुत से छोटे छोटे द्वीप है।

नास्सायु द्वीप—क्षेत्रफल लगभग ३६० एकड़ है। और (डांगेर) द्वीप से ४५ मील दक्षिण पूर्व में स्थित है यहां ३०० एकड़ में खेती होती है।

राकांगा—यह द्वीप तीन मील लम्बा और लगभग २ मील चौड़ा है।

मानीहीकी—यह द्वीप डांगेर द्वीप से ४०० मील पूर्व की ओर स्थित है। इसका घेरा लगभग ३० मील है। यहां नारियल की उपज अधिक होती है। यहां एक अनूप (लैगून) है जहां मोती की सीप बहुत हैं।

पेनहीन द्वीप—मानीहीकी द्वीप के ३०० मील उत्तर पूर्व है। यह प्रशान्त महासागर का एक प्रसिद्ध मोती का द्वीप है। यहां एक अनूप (लैगून) है जहां अच्छा बन्दरगाह बन सकता है। यहां नारियल बहुत होता है।

एतातू द्वीप की जनसंख्या १,४३१, अतीयु की ६३३, मांगैश्र की १२४६, मानाहीकी द्वीप की ४१६, मैनवाए की २२, मोके की ५११, मितिआरो की २८८, पामर्स्टन द्वीप की ८३, पेनर्हीन की ३६५, पुकापुका की ५२६, राकांगा की ३२७, रातोतोंगा की ३६३६ और नीबे की जनसंख्या ३७६५ है। समस्त जनसंख्या का जोड़ १३८६२ है।

पश्चिमी समोश्रा द्वीपसमूह

इसमें चार बड़े और बहुत से छोटे छोटे द्वीप हैं। सभी द्वीप ज्वालामुखी पर्वतों के उद्गार से बने थे। यहां के निवासियों के बाल सीधे और रंग भूरा होता है। वह तगड़े हट्टे कट्टे होते हैं। उनका स्वभाव सरल और अतिसत्कारक होता है। इन द्वीपों में ३६६८८ समोआ जाति के लोग, २४६८ योरुपीय तथा मिश्रित वर्ग के लोग, ८६२ चीनी कुली और लगभग १५८ आदमी भिन्न भिन्न जातियों के हैं।

१७२१-२२ ई० में सर्व प्रथम इन द्वीपों में जैकब सेनेवीन नामक व्यक्ति गया था। उसके पश्चात और

दूसरे ईसाई धर्म प्रचारक गये। १८३८ ई० में इङ्गलैंड के साथ १८३९ ई० में और अमरीका के साथ यहां के निवासियों की संधि हुई। १८४७ ई० में इँगलैंड ने कौंसलर एजेंट, १८५३ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने व्यापारिक एजंट और १८६१ ई० में जर्मनी ने अपना प्रथम राजदूत निर्धारित किया। १४ नवम्बर १८९९ ई० की संधि के अनुसार यह द्वीप जर्मनी को दिये गये।

गत महायुद्ध के समय न्यूज़ीलैंड की सेना ने पश्चिमी समोआ पर अधिकार जमाया। अब इन द्वीपों का प्रबन्ध राष्ट्र संघ के नियम के अनुसार न्यूज़ीलैंड की सरकार द्वारा होता है। पश्चिमी समोआ का राज-प्रबन्ध शासक (एडमिनिस्ट्रेटर) तथा उसकी कौंसिल द्वारा होता है। शासक की नियुक्ति न्यूज़ीलैंड का गवर्नर जनरल करता है यहां का व्यापार न्यूज़ीलैंड और योरुपीय देशों के साथ होता है।

नारू द्वीप

इसका नाम नारू अथवा प्लीजेंट (सुहावना) द्वीप है। यह भूमध्य रेखा से ½ अंश दक्षिण और १६६ अंश

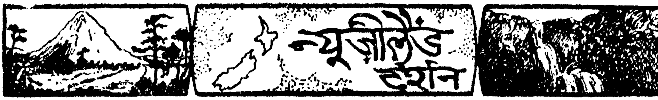
पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। १९१४-१९ के महासमर के पूर्व यह जर्मनी के अधिकार में था। अब इस द्वीप का शासन ब्रिटिश सरकार, आस्ट्रेलियन सरकार और न्यूज़ीलैण्ड की सरकार द्वारा होता है। तीनों सरकारों की सलाह से इस द्वीप के लिये एक एडमिनिस्ट्रेटर (शासक) ५ वर्ष के लिये नियुक्त किया जाता है। यहां तेज़ाबी नमक बहुत है, उसी का व्यापार होता है। सालाना आय १८१९९ पौंड और व्यय १३५८० पौंड है।

यहां पर एक बेतार के तार का स्टेशन और बेतार के तार के टेलीफोन स्टेशन हैं जिनसे दूसरे प्रशान्त महासागरीय द्वीपों से इसका सम्बन्ध रहता है।

रास सागर के द्वीप

३० जुलाई सन् १९२३ ई० की ब्रिटिश साम्राज्य की घोषणा के अनुसार रास सागर अपने समीपवर्ती द्वीपों के साथ ब्रिटिश बना दिया गया। वहां पर रास डिपेनडेन्सी के नाम से ब्रिटिश बस्ती बसा दी गई। यह न्यूज़ीलैंड के गवरनर जनरल के शासन में है।

एक संधि के अनुसार ओसलो के कोनोव और



लार्सेन महाशयों को इस प्रदेश में ह्वेल मछली के शिकार के लिये २१ वर्ष के लिये आज्ञा दी गई है। ह्वेल मछली का तेल निकाला जाता है।

तोके लायु या संयुक्त समूह

इसमें अताफू, नूकूनोनो और फाकाओफो के तीन द्वीप सम्मिलित हैं। इनका क्षेत्रफल २५५० एकड़ है। यह समोआ से २७० मील की दूरी पर हैं। १६१६ ई० में यह ब्रिटिश शासन में आये। १६२६ ई० में इनका शासन न्यूज़ीलैंड को दिया गया। अब यहां का शासन पश्चिमी समोआ के शासक द्वारा होता है।

अताफू की जन-संख्या ३६०, नूकूनोनो की २२६ और फाकाओफो की ४४४ है। यहाँ की शिक्षा का प्रबन्ध धर्मप्रचारक लोगों के हाथ में है।

यहाँ के निवासी पोलीनीसियन जाति के लोग हैं। उनकी भाषा समोअ लोगों से मिलती जुलती है। द्वीप के रहने वालों पर वहाँ सरदार लोग वहाँ की सभा द्वारा शासन करते हैं। यहाँ से प्रति वर्ष ३६५ टन कोपरा बाहर भेजा जाता है।